सुमित्रानंदन पंत की अन्य रचनाएँ

काव्य संग्रह : पल्लव, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण-किरण, स्वर्ण धूलि, युग पथ, उत्तरा, प्रतिमा, वाणी, कला और बूढ़ा चाँद।

रूपक : ज्योत्स्ना, रजत शिखर, शिल्पी, सौवर्ण।

गद्य : पाँच कहानियाँ, गद्य पथ (निबंध), साठ वर्ष (आत्मकथा) हार (उपन्यास), शिल्प और दर्शन (निबंध)।

अनुवाद : मधुज्वाल (रूबाइयात उमर खैयाम का गीतांतर)।

संकलन : पल्लविनी, आधुनिक कवि (२) : सुमित्रानंदन पंत, कवि श्री सुमित्रानंदन पंत, रश्मिबंध, चिदंबरा, अभिषेकिता, आज लोकप्रिय हिंदी कवि : सुमित्रानंदन पंत।

बच्चन की अन्य रचनाएँ

काव्य संग्रह : मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संग आकुल अंतर, सतरंगिनी, हलाहल, बंगाल का काल, सूत माला, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, धार के इधर-उ भारती और अंगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभंगिमा, आरं रचनाएँ-महुला-दूसरा भाग।

गद्य : आरंभिक रचनाएँ-तीसरा भाग (कहानियाँ), कवियों में स मंत (पंत-काव्य-समीक्षा)।

अनुवाद : खैयाम की मधुशाला, उमर खैयाम की रुबाइयाँ, मैक ओथेलो, जन गीता।

संकलन : बच्चन के साथ क्षण भर, सोपान, आज के लोकप्रिय कवि : हरिवंश राय बच्चन, आधुनिक कवि (७) : बच्च

खादी के फूल

श्री सुमित्रानंदन पंत
बच्चन

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

सुमित्रानंदन पंत की अन्य रचनाएँ

काव्य संग्रह : पल्लव, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण-किरण, स्वर्ण धूलि, युग पथ, उत्तरा, प्रतिमा, वाणी, कला और बूढ़ा चाँद।

रूपक : ज्योत्स्ना, रजत शिखर, शिल्पी, सौवर्ण।

गद्य : पाँच कहानियाँ, गद्य पथ (निबंध), साठ वर्ष (आत्मकथा), हार (उपन्यास), शिल्प और दर्शन (निबंध)।

अनुवाद : मधुज्वाल (रूबाइयात उमर खैयाम का गीतांतर)।

संकलन : पल्लविनी, आधुनिक कवि (२) : सुमित्रानंदन पंत, कवि श्री: सुमित्रानंदन पंत, रश्मिबंध, चिदंबरा, अभिषेकिता, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि : सुमित्रानंदन पंत।

बच्चन की अन्य रचनाएँ

काव्य संग्रह : मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, हलाहल, बंगाल का काल, सूत की माला, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, धार के इधर-उधर, आरती और अंगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभंगिमा, प्रारंभिक रचनाएँ-पहला-दूसरा भाग।

गद्य : प्रारंभिक रचनाएँ-तीसरा भाग (कहानियाँ), कवियों में सौम्य संत (पंत-काव्य-समीक्षा)।

अनुवाद : खैयाम की मधुशाला, उमर खैयाम की रुबाइयाँ, मैकबेथ, ओथेलो, जन गीता।

संकलन : बच्चन के साथ क्षण भर, सोपान, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि : हरिवंश राय बच्चन, आधुनिक कवि (७) : बच्चन।

खादी के फूल

श्री सुमित्रानंदन पंत
बच्चन

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

सुमित्रानंदन पंत की अन्य रचनाएँ

काव्य संग्रह : पल्लव, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, युगांत, युगवाणी, ग्राम्या, स्वर्ण-किरण, स्वर्ण धूलि, युग पथ, उत्तरा, प्रतिमा, वाणी, कला और बूढ़ा चाँद।

रूपक : ज्योत्स्ना, रजत शिखर, शिल्पी, सौवर्ण।

गद्य : पाँच कहानियाँ, गद्य पथ (निबंध), साठ वर्ष (आत्मकथा), हार (उपन्यास), शिल्प और दर्शन (निबंध)।

अनुवाद : मधुज्वाल (रुबाइयात उमर ख़ैयाम का गीतांतर)।

संकलन : पल्लविनी, आधुनिक कवि (२) : सुमित्रानंदन पंत, कवि श्री: सुमित्रानंदन पंत, रश्मिबंध, चिदंबरा, अभिषेकिता, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि : सुमित्रानंदन पंत।

बच्चन की अन्य रचनाएँ

काव्य संग्रह : मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल अंतर, सतरंगिनी, हलाहल, बंगाल का काल, सूत की माला, मिलन यामिनी, प्रणय पत्रिका, धार के इधर-उधर, आरती और अंगारे, बुद्ध और नाचघर, त्रिभंगिमा, प्रारंभिक रचनाएँ-पहला-दूसरा भाग।

गद्य : प्रारंभिक रचनाएँ-तीसरा भाग (कहानियाँ), कवियों में सौम्य संत (पंत-काव्य-समीक्षा)।

अनुवाद : ख़ैयाम की मधुशाला, उमर ख़ैयाम की रुबाइयाँ, मैकबेथ, ओथेलो, जन गीता।

संकलन : बच्चन के साथ क्षण भर, सोपान, आज के लोकप्रिय हिंदी कवि : हरिवंश राय बच्चन, आधुनिक कवि (७)

खादी के फूल

श्री सुमित्रानंदन पंत
बच्चन

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

राष्ट्र-पिता

के

चरणों में अर्पित

प्राक्कथन

(पहले संस्करण से)

इस बार प्रयाग में बच्चन के साथ अपने दस मास के सहवास की स्मृति को स्थायित्व प्रदान करने के उद्देश्य से ही 'खादी के फूल' के नाम से, महात्मा जी को श्रद्धांजलि स्वरूप, अपनी और बच्चन की कविताओं का यह संयुक्त संग्रह प्रकाशित कराने को मैं प्रेरित हुआ हूँ।

महात्मा जी के अथक उद्योग से जहाँ हमें स्वाधीनता प्राप्त हुई है वहाँ उनके महान व्यक्तित्व से हमें गंभीर सांस्कृतिक प्रेरणा भी मिली है। महात्मा जी ने राजनीति के कर्दम में अहिंसा के वृंत पर जिस सत्य को जन्म दिया है वह संस्कृति की देवी का ही आसन है। अतः बापू के उज्ज्वल जीवन की पुण्यस्मृति से सुरभित इन खादी के फूलों को हम पाठकों को इस विनीत आशा से समर्पित कर रहे हैं कि हम खादी के स्वच्छ परिधान के भीतर गांधीवाद के संस्कृत हृदय को स्पंदित कर सकेंगे।

प्रयाग
मई, १९४८

श्री सुमित्रानंदन पंत

गीतों की प्रथम पंक्ति सूची

श्री सुमित्रानंदन पंत के गीत		१३ से २७
बच्चन के गीत		२९ से १७१

	प्रथम पंक्ति		पृष्ठ
१	अंतर्धान हुआ फिर देव विचर धरती पर	...	१३
२	हाय, हिमालय ही पल में हो गया तिरोहित	...	१४
३	आज प्रार्थना से करते तृण तरु भर मर्मर,	...	१५
४	हाय, आँसुओं के आँचल से ढँक नत आनन	...	१६
५	हिम किरीटिनी, मौन आज तुम शीश झुकाए,	...	१७
६	देख रहे क्या देव, खड़े स्वर्गोच्च शिखर पर	...	१८
७	देख रहा हूँ, शुभ्र चाँदनी का सा निर्झर	...	१९
८	देव पुत्र था निश्चय वह जन मोहन मोहन,	...	२०
९	देव, अवतरण करो धरा-मन में क्षण, अनुक्षण,	...	२१
१०	दर्प दीप्त मनु पुत्र, देव, कहता तुमको युग मानव,	...	२२
११	प्रथम अहिंसक मानव बन तुम आए हिंस्र धरा पर,	...	२३
१२	सूर्य किरण सतरंगों की थीं करतीं वर्षण	...	२४
१३	राजकीय गौरव से जाता आज तुम्हारा अस्थि फूल रथ,	...	२५
१४	लो, झरता रक्त प्रकाश आज नीले बादल के अंचल से,	...	२६
१५	बारबार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन	...	२७
१६	हो गया क्या देश के सबसे सुनहले दीप का निर्वाण !	...	२९
१७	ओ राष्ट्र महाकवि, राष्ट्रनाद, मैथिलीशरण,	...	४०
१८	तुम पिए पड़े हो कहाँ, 'शायरे इन्कलाब,'	...	४३
१९	इस शामेवतन में इतना गहरा अंधकार,	...	४६
२०	ओ सरोजिनी यह तेरी ओजभरी वाणी,	...	५१

२२	'दावात' ग्रन्थ के अंदर गोते मौन आज,	...	५३
२३	भारत पर आकर टूटी है क्या आधि-व्याधि,	...	५५
२४	रघुपति, राघव, राजा राम,	...	५८
२५	हो गया गर्व भारत माता का आज चूर,	...	५९
२६	इस महा विपद में व्याकुल हो मत शीश धुनो,	...	६०
२७	कल्मष-कलुष-घेरी धरती पर	...	६१
२८	भारतमाता का सबसे प्यारा बड़ा पूत	...	६२
२९	जब वर्षों हमने खून-पसीना एक किया,	...	६३
३०	यह गांधी मरकर पड़ा नहीं है धरती पर,	...	६४
३१	वे तो भारतमाता की पावन वेदी पर,	...	६५
३२	जो गोली खाकर गिरी, मरी, वह थी छाया,	...	६६
३३	जिसने युग-युग से दबे हुओं को दी भाषा,	...	६७
३४	जिन आँखों में करुणा का सिंधु छलकता था,	...	६८
३५	जिसने रिवाल्वर तेरे आगे ताना था,	...	६९
३६	अंतिम क्षण में जो भाव हृदय में स्थित होता,	...	७०
३७	बापू किसको पिस्तौल मारने को लाया,	...	७१
३८	जब से था हमने होश सँभाला उनका स्वर,	...	७३
३९	था जिसे नहीं परदेशी शासन का कुछ डर,	...	७४
४०	हत्यारे गोरों की यौवन में सही मार,	...	७६
४१	घर तुमको जनता के हित कारागार हुआ,	...	७८
४२	जो महिमावानों की महानता दिखलाई,	...	७९
४३	यह जग अपना मग भूला हुआ मुसाफ़िर है,	...	८०
४४	भारत के आँगन में जो आग सुलगती थी,	...	८१
४५	तुमने गुलाम हिंदोस्तान में जन्म लिया,	...	८३
४६	हम घृणा-क्रोध-कटुता जितनी फैलाते थे,	...	८४
	लड़नेवालों में तुम-सा कौन लड़ाका था,	...	८५
	वे अग्नि पताका ले दुनिया में आए थे,	...	८६
	बापू, कितने ही तेरे एक इशारे पर	...	८७
	जब कानपुर के हिंदू-मुसलिम दंगे में	...	८८

५१ वे तप का तेज लिए थे अपने आनन पर, ... ९०
५२ सुकरात संत ने पिया जहर का प्याला था, ... ९१
५३ जब देव-असुर दोनों ने मिलकर सिंधु मथा, ... ९२
५४ वह सत्य अहिंसा का सागर था चिर निर्मल, ... ९३
५५ बापू के तन से बेज़बान लोहू बहकर, ... ९५
५६ भारत के हाथों पाप हुआ ऐसा भारी, ... ९७
५७ हम सब अपने पापी हाथों को मलते हैं, ... ९८
५८ भाग्य था वे थे हमारे पथ-प्रदर्शक, ... ९९
५९ पृथ्वी पर जितने देश, जाति औ' महापुरुष, ... १००
६० बापू के अवसान पर जब मन दुखित-उदास, ... १०१
६१ जब तुम सजीव धरती पर चलते फिरते थे, ... १०३
६२ खोकर अपने हाथों से दौलत गांधी-सी ... १०५
६३ वे आत्मा जीवी थे काया से कहीं परे, ... १०६
६४ अज्ञान, अशिक्षित और अदीक्षित भारत में .. १०७
६५ है गांधी हिंदू जनता का दुश्मन भारी, ... १०९
६६ उसने खुद तृण-कुश-कंटक जाल चवाया, ... ११०
६७ हिंदू जनता को रहा सदा वह धर्म-प्राण, ... ११२
६८ जब लाखों, कर्मों से पशु को हारमारे थे, ... ११४
६९ उसके बेटे दोनों थे हिंदू-मुसल्मान, ... ११५
७० ईश्वर-अल्ला एकहि नाम, ... ११६
७१ ईश्वर-अल्ला एकहि नाम, ... ११७
७२ एक हज़ार बरस की जिसने ... ११९
७३ नरसी मेहता का गीत रेडियो गाता है, ... १२२
७४ गांधी को हत्यारे ने हमसे छीन लिया, ... १२४
७५ हिंसा जो उसको चाल रचे चल सकती है, ... १२५
७६ अपने ईश्वर पर उसको बड़ा भरोसा था, ... १२६
७७ जिस दुनिया में भौतिकता पूजी जाती थी, ... १२८
७८ थी राजनीति क्या, छल-बल सिद्ध अखाड़ा था, ... १३०
७९ वे कहते थे, दुश्मन को हम वह जीत सका ... १३१

८० बापू के मरने पर यह शब्द जिन्ना के थे, ... १३२
८१ यह सच है, नाथू ने बापू जी को मारा, ... १३३
८२ उसने अपना सिद्धांत न बदला प्राण देकर, ... १३४
८३ तुम गए, भाग्य ही हमने समझा अस्त हुआ, ... १३५
८४ बापू-बापू कहना तुमको है बहुत सरल, ... १३६
८५ बापू था ऐसा वातावरण विषाक्त बना, ... १३७
८६ बापू तुमसे जो सत्य प्रवाहित होते थे, ... १३६
८७ जब गांधी जी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को, ... १४०
८८ भूले से भी तुमने यह दावा नहीं किया, ... १४१
८९ जब कि भारत भूमि थी भीषण तिमिर में आवृता, ... १४२
९० जब स्वर्ग लोक में पहुँचे बापू तन तजकर ... १४३
९१ था उचित कि गांधी जी की निर्मम हत्या पर ... १४५
९२ दस लाख जनों के जिसके शव पर फूल चढ़े, ... १४७
९३ ऐसा भी कोई जीवन का मैदान कहीं ... १४८
९४ तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर, ... १४९
९५ गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा, ... १५०
९६ बलिदानी तो अपने प्राणों से जाता है, ... १५२
९७ ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से, ... १५३
९८ भारतमाता की युग-युग उर्वर धरती पर ... १५४
९९ उनके प्रभाव से हृदय-हृदय था अनुरंजित, ... १५५
१०० आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण नुमाइश में ... १५७
१०१ बापू के बलिदानी शव पर ... १५९
१०२ हम गांधी की प्रतिमा के इतने पास खड़े ... १६१
१०३ बापू की पावन छाती से जो खून बहा, ... १६४
१०४ उस परम हंस के घायल होकर गिरते ही ... १६५
१०५ तुम महा साधना, जग-कुवासना में विलीन, ... १६७
१०६ यह समय नहीं है गाने, गान सुनाने का, ... १६८
१०७ वन गमन समय मुनियों का वेश बनाए, ... १६९
कुछ नहीं हमारे शब्द, छंद में, रागों में, ... १७१

खादी के फूल

८०	बापू के मरने पर यह शब्द जिना के थे,	...	१३२
८१	यह सच है, नाथू ने बापू जी को मारा,	...	१३३
८२	उसने अपना सिद्धांत न बदला मात्र लेश,	...	१३४
८३	तुम गए, भाग्य ही हमने समझा अस्त हुआ,	...	१३५
८४	बापू-बापू कहना तुमको है बहुत सरल,	...	१३६
८५	बापू था ऐसा वातावरण विषाक्त बना,	...	१३७
८६	बापू तुमसे जो सत्य प्रवाहित होते थे,	...	१३९
८७	जब गांधी जी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को,	...	१४०
८८	भूले से भी तुमने यह दावा नहीं किया,	...	१४१
८९	जब कि भारत भूमि थी भीषण तिमिर में आवृता,	...	१४२
९०	जब स्वर्ग लोक में पहुँचे बापू तन तजकर	...	१४३
९१	था उचित कि गांधी जी की निर्मम हत्या पर	...	१४५
९२	दस लाख जनों के जिसके शव पर फूल चढ़े,	...	१४७
९३	ऐसा भी कोई जीवन का मैदान कहीं	...	१४८
९४	तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर,	...	१४९
९५	गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा,	...	१५०
९६	बलिदानी तो अपने प्राणों से जाता है,	...	१५२
९७	ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से,	...	१५३
९८	भारतमाता की युग-युग उर्वर धरती पर	...	१५४
९९	उनके प्रभाव से हृदय-हृदय था अनुरंजित,	...	१५५
१००	आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण नुमाइश में	...	१५७
१०१	बापू के बलिदानी शव पर	...	१५९
१०२	हम गांधी की प्रतिमा के इतने पास खड़े	...	१६१
१०३	बापू की पावन छाती से जो खून बहा,	...	१६४
१०४	उस परम हंस के घायल होकर गिरते ही	...	१६५
१०५	तुम महा साधना, जग-शुभाशंसा में विलीन,	...	१६७
१०६	यह समय नहीं है गाने, गान सुनाने का,	...	१६८
१०७	बन श्रमण समय मुनियों का वेश बनाए,	...	१६९
	कुछ नहीं हमारे शब्द, छंद में, रागों में,	...	१७१

खादी के फूल

८०	बापू के मरने पर यह शब्द जिना के थे,	... १३२
८१	यह सच है, मानू ने बापू जी को मारा,	... १३३
८२	उसने अपना सिद्धांत न बदला मात्र लेश,	... १३४
८३	लुग गए, भाग्य ही हमने समझा भरत हुआ,	... १३५
८४	बापू-बापू कहना तुमको है बहुत सरल,	... १३६
८५	बापू था ऐसा वातावरण विशाल बना,	... १३७
८६	बापू तुमसे जो सत्य प्रवाहित होते थे,	... १३८
८७	जब गांधी जी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को,	... १४०
८८	भूले से भी तुमने यह दावा नहीं किया,	... १४१
८९	जब कि भारत भूमि थी भीषण तिमिर में आवृता,	... १४२
९०	जब स्वर्ग लोक में पहुँचे बापू तन तजकर	... १४३
९१	था उचित कि गांधी जी की निर्मम हत्या पर	... १४५
९२	दस लाख जनों के जिसके शव पर फूल चढ़े,	... १४७
९३	ऐसा भी कोई जीवन का मैदान नहीं	... १४८
९४	तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर,	... १४९
९५	गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा,	... १५०
९६	बलिदानी तो अपने प्राणों से जाता है,	... १५२
९७	ओ देशवासियो, बैठ न जाओ पत्थर से,	... १५३
९८	भारतमाता की युग-युग उर्वर धरती पर	... १५४
९९	उनके प्रभाव से हृदय-हृदय था अनुरंजित,	... १५५
१००	आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण नुमाइश में	... १५७
१०१	बापू के बलिदानी शव पर	... १५९
१०२	हम गांधी की प्रतिभा के इतने पास खड़े	... १६१
१०३	बापू की पावन छाती से जो खून बहा,	... १६४
१०४	उस परम हंस के घायल होकर गिरते ही	... १६५
१०५	तुम महा साधना, जग-कुवासना में विलीन,	... १६७
१०६	यह समय नहीं है गाने, गान सुनाने का,	... १६८
१०७	वन गमन समय मुनियों का वेश बनाए,	... १६९
		... १७

खादी के फूल

१

अंतर्धान हुआ फिर देव विचर धरती पर,
स्वर्ग रुधिर से मर्त्यलोक की रज को रँगकर!
टूट गया तारा, अंतिम आभा का दे वर,
जीर्ण जाति मन के खँडहर का अंधकार हर!

अंतर्मुख हो गई चेतना दिव्य अनामय
मानस लहरों पर शतदल सी हँस ज्योतिर्मय!
मनुजों में मिल गया आज मनुजों का मानव
चिरपुराण को बना आत्मबल से चिर अभिनव!

आओ, हम उसको श्रद्धांजलि दें देवोचित,
जीवन सुंदरता का घट मृत को कर अर्पित
मंगलप्रद हो देवमृत्यु यह हृदय विदारक
नव भारत हो बापू का चिर जीवित स्मारक!

बापू की चेतना बने पिक का नव कूजन,
बापू की चेतना वसंत बखेरे नूतन!

२

हाय, हिमालय ही पल में हो गया तिरोहित
ज्योतिर्मय जल से जन धरणी को कर प्लावित !
हाँ, हिमाद्रि ही तो उठ गया धरा से निश्चित
रजत वाष्प सा अंतर्नभ में हो अंतर्हित !

आत्मा का वह शिखर, चेतना में लय क्षण में,
व्याप्त हो गया सूक्ष्म चाँदनी सा जन मन में !
मानवता का मेरु, रजत किरणों से मंडित,
अभी अभी चलता था जो जग को कर विस्मित,
शून्य हो गया : लोक चेतना के क्षत पट पर
अपनी स्वर्गिक स्मृति की शाश्वत छाप छोड़कर !

आओ, उसकी अक्षय स्मृति को नींव बनाएँ,
उसपर संस्कृति का लोकोत्तर भवन उठाएँ !
स्वर्ण शुभ्र धर सत्य कलश स्वर्गोच्च शिखर पर
विश्व प्रेम में खोल अहिंसा के गवाक्ष वर !

३

आज प्रार्थना से करते तृण तरु भर मर्मर,
सिमटा रहा चपल कूलों को निस्तल सागर !
नम्र नीलिमा में नीरव, नभ करता चिंतन
श्वास रोक कर ध्यान मग्न सा हुआ समीरण !

क्या क्षण भंगुर तन के हो जाने से ओझल
मूनेपन में समा गया यह सारा भूतल ?
नाम रूप की सीमाओं से मोह मुक्त मन
या अरूप की ओर बढ़ाता स्वप्न के चरण ?

ज्ञात नहीं : पर द्रवीभूत हो दुख का बादल
बरस रहा अब नव्य चेतना में हिम उज्वल,
बापू के आशीर्वाद सा ही : अंतस्तल
लहरा है भर गया सौम्य आभा से शीतल !

गांधी के उज्वल जीवन सौंदर्य पर सरस
भावी के सतरँग सपने कँप उठते मनमन !

हाय, आँसुओं के आँचल से ढँक नत आनन
तू विषाद की शिला बन गई आज अचेतन,
ओ गांधी की धरे, नहीं क्या तू अकाय-व्रण?
कौन शस्त्र से भेद सका तेरा अछेद्य तन?

तू अमरों की जनी, मर्त्य भू में भी आकर
रही स्वर्ग से परिणीता, तप पूत निरंतर!
मंगल कलशों से तेरे वक्षोजों में घन
लहराता नित रहा चेतना का चिर यौवन!
कीर्ति स्तंभ से उठ तेरे कर अंबर पट पर
अंकित करते रहे अमिट ज्योतिर्मय अक्षर!

उठ, ओ गीता के अक्षय यौवन की प्रतिमा,
समा सकी कब धरा स्वर्ग में तेरी महिमा!
देख, और भी उच्च हुआ अब भाल हिम शिखर
बाँध रहा तेरे अंचल से भू को सागर!

हिम किरीटिनी, मौन आज तुम शीश झुकाए,
सौ वसंत हों कोमल अंगों पर कुम्हलाए !
वह जो गौरव शृंग धरा का था स्वर्गोज्वल,
टूट गया वह ?—हुआ अमरता में निज ओझल !
लो, जीवन सौंदर्य ज्वार पर आता गांधी,
उसने फिर जन सागर में आभा पुल बाँधी !

खोलो, मा, फिर बादल सी निज कबरी श्यामल,
जन मन के शिखरों पर चमकें विद्युत के पल !
हृदय हार सुरधुनी तुम्हारी जीवन चंचल,
स्वर्ण श्रोणि पर शोभित धरे सोया विन्ध्याचल !
गज रदनों से शुभ्र तुम्हारे जघनों में घन
प्राणों का उन्मादन जीवन करता नर्तन !

तुम अनंत यौवना धरा हो, स्वर्गाकांक्षित,
जन को जीवन शोभा दो : भू हो मनुजोचित !

९

देख रहे क्या देव, खड़े स्वर्गोच्च शिखर पर
लहराता नव भारत का जन जीवन सागर?
द्रवित हो रहा जाति मनस का अंधकार घन
नव मनुष्यता के प्रभात में स्वर्णिम चेतन!

मध्ययुगों का घृणित दाय हो रहा पराजित,
जाति द्वेष, विश्वास अंध, औदास्य अपरिमित!
सामाजिकता के प्रति जन हो रहे जागरित
अति वैयक्तिकता में खोए, मुंड विभाजित!

देव, तुम्हारी पुण्य स्मृति बन ज्योति जागरण
नव्य राष्ट्र का आज कर रही लोह संगठन!
नव जीवन का रुधिर हृदय में भरता स्पंदन,
नव्य चेतना के स्वप्नों से विस्मित लोचन!

भारत की नारी ऊषा सी आज अगुंठित,
भारत की मानवता नव आभा से मंडित!

७

देख रहा हूँ, शुभ्र चाँदनी का सा निर्झर
गांधी युग अवतरित हो रहा इस धरती पर!
विगत युगों के तोरण, गुंबद, मीनारों पर
नव प्रकाश की शोभा रेखा का जादू भर!

संजीवन पा जाग उठा फिर राष्ट्र का मरण,
छायाएँ भी आज चल रहीं भू पर चेतन,—
जन मन में जग, दीप शिखा के पग धर नूतन
भावों के नव स्वप्न धरा पर करते विचरण!

सत्य अहिंसा बन अंतर्राष्ट्रीय जागरण
मानवीय स्पर्शों से भरते हैं भू के व्रण!
झुका तड़ित-अणु के अस्त्रों को, कर आरोहण,
नव मानवता करती गांधी का जय घोषण!

मानव के अंतरतम शुभ्र तुषार के शिखर
नम्र चेतना मंडित, स्वर्णिम उठे हैं निखर!

८

देव पुत्र था निश्चय वह जन मोहन मोहन,
सत्य चरण धर जो पवित्र कर गया धरा कण !
विचरण करते थे उसके संग विविध युग वरद
राम, कृष्ण, चैतन्य, मसीहा, बुद्ध, मुहम्मद !

उसका जीवन मुक्त रहस्य कला का प्रांगण,
उसका निश्छल हास्य स्वर्ग का था वातायन !
उसके उच्चादर्शों से दीपित अब जन मन,
उसका जीवन स्वप्न राष्ट्र का बना जागरण !

विश्व सभ्यता की कृत्रिमता से हो पीड़ित
वह जीवन सारल्य कर गया जन में जागृत !
यांत्रिकता के विषम भार से जर्जर भू पर
मानव का सौंदर्य प्रतिष्ठित कर देवोत्तर !

आत्म दान से लोक सत्य को दे नव जीवन
नव संस्कृति की शिला रख गया भू पर चेतन !

९

देव, अवतरण करो धरा-मन में क्षण, अनुक्षण,
नव भारत के नव जीवन धन, नव मानवपन!
जाति ऐक्य के ध्रुव प्रतीक, जग वंद्य महात्मन्,
हिंदू मुस्लिम बढ़े तुम्हारे युगल चरण बन!

भावी कहती कानों में भर गोपन मर्मर,—
हिंदू मुस्लिम नहीं रहेंगे भारत के नर!
मानव होंगे वे, नव मानवता से मंडित,
मध्य युगों की कारा से भू पर चल विस्तृत!

जाति द्वेष से मुक्त, मनुजता के प्रति जीवित,
विकसित होंगे वे, उच्चादर्शों से प्रेरित!
भू जीवन निर्माण करेंगे, निश्चित जन मत,
बापू में हो युक्त, मुक्त हो जग से युगपत्!

नव युग के चेतना ज्वार में कर अवगाहन
नव मन, नव जीवन-सौंदर्य करेंगे धारण!

दर्प दीप्त मनु पुत्र, देव, कहता तुमको युग मानव,
नहीं जानता वह, यह मानव मन का आत्म पराभव!
नहीं जानता, मन का युग मानव आत्मा का शैशव,
नहीं जानता मनु का सुत निज अंतर्नभ का वैभव!

जिन स्वर्गिक शिखरों पर करते रहे देव नित विचरण,
जिस शाश्वत सुख के प्रकाश से भरते रहे दिशा क्षण,
आज अपरिचित उससे जन, ओढ़े प्राणों का जीवन,
मन की लघु डगरों में भटके, तन को किए समर्पण!

वे मिट्टी-से आज दवाए मुँह में ममता के तृण
नहीं जानते वे, रज की काया पर देवों का ऋण!
ज्योति चिह्न जो छोड़ गए जन मन में बुद्ध महात्मन्
वे मानव की भावी के उज्वल पथ दर्शक नूतन!

मनोयंत्र कर रहा चेतना का नव जीवन ग्रंथित,
लोकोत्तर के संग देवोत्तर मनुज हो रहा विकसित!

प्रथम अहिंसक मानव बन तुम आए हिंस्र धरा पर,
मनुज बुद्धि को मनुज हृदय के स्पर्शों से संस्कृत कर!
निबल प्रेम को भाव गगन से निर्मम धरती पर धर
जन जीवन के बाहु पाश में बाँध गए तुम दृढ़तर!
द्वेष घृणा के कटु प्रहार सह, करुणा दे प्रेमोत्तर
मनुज अहं के गत विधान को बदल गए, हिंसा हर!

घृणा द्वेष मानव उर के संस्कार नहीं हैं मौलिक,
वे स्थितियों की सीमाएँ हैं : जन होंगे भौगोलिक!
आत्मा का संचरण प्रेम होगा जन मन के अभिमुख,
हृदय ज्योति से मंडित होगा हिंसा स्पर्धा का मुख!

लोक अभीप्सा के प्रतीक, नव स्वर्ग मर्त्य के परिणय,
अग्रदूत बन भव्य युग पुरुष के आए तुम निश्चय!
ईश्वर को दे रहा जन्म युग मानव का संघर्षण,
मनुज प्रेम के ईश्वर, तुम यह सत्य कर गए घोषण!

१२

सूर्य किरण सतरंगों की श्री कान्ति वर्षण
सौ रंगों का सम्मोहन कर गए तुम सृजन,—
रत्नच्छाया सा, रहस्य शोभा से गुंफित,
स्वर्गोन्मुख सौंदर्य प्रेम आनंद से दवमित!

स्वप्नों का चंद्रातप तुम बुन गए, कलाधर,
विहँस कल्पना नभ से, भाव-जलद-पर रँगकर,
रहस प्रेरणा की तारक ज्वाला से स्पंदित
विश्व चेतना सागर को कर रंग ज्वार स्मित!

प्राण शक्ति के तड़ित मेघ से मंद्र भर स्तनित
जन भू को कर गए अग्नि बीजों से गर्भित,
तुम अखंड रस पावस का जीवन प्लावन भर
जगती को कर अजर हृदय यौवन से उर्वर!

आज स्वप्न पथ से आते तुम मौन धर चरण,
बापू के गुरुदेव, देखने राष्ट्र जागरण!

राजकीय गौरव से जाना आज तुम्हारा अस्थि फूल रथ,
श्रद्धा मौन असंख्य दृगों से अंतिम दर्शन करता जन पथ !
हृदय स्तब्ध रह जाता क्षण भर, सागर को पी गया ताम्र घट ?
घट घट में तुम समा गए, कहता विवेक फिर, हटा तिमिर पट!
बाँध रही गीले आँचल में गंगा पावन फूल ससंभ्रम,
भूत भूत में मिलें, प्रकृति क्रम : रहे तुम्हारे संग न देह भ्रम,

अमर तुम्हारी आत्मा, चलती कोटि चरण धर जन में नूतन,
कोटि नयन नवयुग तोरण बन, मन ही मन करते अभिनंदन !
भूल क्षणिक अवसान स्वप्न यह, कोटि कोटि उर करते अनुभव
बापू नित्य रहेंगे जीवित भारत के जीवन में अभिनव !

सम्भव होते महापुरुष : वे अगणित तन कर लेते धारण,
मृत्यु द्वार कर पार, पुनर्जीवित हो, भू पर करते विचरण !
सर्वोचित सम्मान तुम्हें देना, युग सारथि, जन मन का रथ,
नव आत्मा बन उसे चलाओ, ज्योतित हो भावी जीवन पथ !

लो, भरता रवा प्रकाश आज नीले वादल के अंचल में
रँग रँग के उड़ते सूक्ष्म वाष्प मानस के रश्मि ज्वलित जल से
प्राणों के सिंधु हरित पट से लिपटी हँस सोने की ज्वाल
स्वप्नों की सुषमा में सहसा निखरा अवचेतन अँधियाला

आभा रेखाओं के उठते गृह, धाम, अट्ट, नवयुग तोरण
रुपहले परों की अप्सरियाँ करती स्मित भाव सुमन वर्षण
दिव्यात्मा पहुँची स्वर्गलोक, कर काल अश्व पर आरोहण
अंतर्मन का चैतन्य जगत करता बापू का अभिनंदन :

नव संस्कृति की चेतना शिला का न्यास हुआ अब भू-मन में,
नव लोक सत्य का विश्व संचरण हुआ प्रतिष्ठित जीवन में!
गत जाति धर्म के भेद हुए भावी मानवता में चिरलय,
विद्वेष घृणा का सामूहिक नव हुआ अहिंसा से परिचय!

तुम धन्य युगों के हिंसक पशु को बना गए मानव विकसित,
तुम शुभ्र पुरुष बन आए, करने स्वर्ण पुरुष का पथ विस्तृत!

१५

बारबार अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, तुम कब थे भंगुर तन ?
व्याप्त हो गए जन मन में तुम आज महात्मन्
नव प्रकाश बन, आलोकित कर नव जग-जीवन !
पार कर चुके थे निश्चय तुम जन्म औ' निधन
इसीलिए बन सके आज तुम दिव्य जागरण !
श्रद्धानत अंतिम प्रणाम करता तुमको मन
हे भारत की आत्मा, नव जीवन के जीवन !

१६

हो गया क्या देश के
सबसे सुनहले दीप का
निर्वाण!

२. वह जला क्या जग उठी इस जाति की
सोई हुई तक़दीर,
वह जला क्या दासता की गल गई
बंधन बनी जंजीर,
वह जला क्या जग उठी आज़ाद होने
की लगन मज़बूत,
वह जला क्या हो गई बेकार कारा-
गार की प्राचीर,

वह जला क्या विश्व ने देखा हमें
आश्चर्य से दृग खोल,

वह जला क्या मदितों ने क्रांति की
देखी ध्वजा अम्लान,

हो गया क्या देश के
सबसे दमकते दीप का
निर्वाण !

४१ वह उठा तो एक लौ में बंद होकर
आ गई ज्यों भोर,
वह उठा तो उठ गई सब देश भर की
आँख उसकी ओर,
वह उठा तो उठ पड़ीं सदियाँ वि
अँगड़ाइयाँ ले साथ,
वह उठा तो उठ पड़े युग-युग दबे
दुखिया, दलित, कमज़ोर,

वह उठा तो उठ पड़ीं उत्साह
लहरें दृगों के बीच,

वह उठा तो झुक गए मन्द
अत्याचार के अभिमान,

हो गया क्या देश के
सबसे प्रभामय दीप का
निर्वाण!

३. वह हँसा तो

मधुमास-जीवन-श्वास,

वह हँसा तो क़ौम के रौशन भविष्यत

का हुआ विश्वास

वह हँसा तो जड़ उमंगों ने किया

फिर से नया शृंगार,

वह हँसा तो हँस पड़ा इस देश का

रूठा हुआ इतिहास,

वह हँसा तो रह गया संदेह-शंका

को न कोई ठौर,

वह हँसा तो हिचकिचाहट-भीति-भ्रम का

हो गया अवसान,

हो गया क्या देश के

सबसे चमकते दीप का

निर्वाण !

गांधी के

४१ वह उठा तो एक लौ में बंद होकर
आ गई ज्यों भोर,
वह उठा तो उठ गई सब देश भर की
आँख उसकी ओर,
वह उठा तो उठ पड़ीं सदियाँ विगत
अँगड़ाइयाँ ले साथ,
वह उठा तो उठ पड़े युग-युग दबे
दुखिया, दलित, कमज़ोर,

यह उठा तो उठ पड़ीं उत्साह की
लहरें दृगों के बीच,

वह उठा तो झुक गए अन्याय,
अत्याचार के अभिमान,

हो गया क्या देश के
सबसे प्रभामय दीप का
निर्वाण!

धातु की अंगूठी,
थी चढ़ी उसपर न हीरे और मोती
की सजीली खोल,
मृत्तिका की एक मुट्ठी थी कि उपमा
सादगी थी आप,
किंतु उसका मान सारा स्वर्ग सकता
था कभी क्या तोल ?

ताज शाहों के अगर उसने झुकाए
तो तअज्जुब कौन,

कर सका वह निम्नतम, कुचले हुओं का
उच्चतम उत्थान,

हो गया बना देश के
सबसे मनस्वी दीप का
निर्वाण !

६. वह चमकता था, मगर था कब लिए
तलवार पानीदार,
वह दमकता था मगर अज्ञात थे
उसको सदा हथियार,
एक अंजलि स्नेह की थी तरलता में
स्नेह के अनुरूप,
किंतु उसकी धार में था डूब सकता
देश क्या, संसार;

स्नेह में डूबे हुए ही तो हिफ़ाज़त
से पहुँचते पार,

स्नेह में जलते हुए ही कर सके हैं
ज्योति-जीवनदान,

हो गया क्या देश के
सबसे तपस्वी दीप का
निर्वाण !

काती रुई का सूत,

थी बिखरती देश भर के घर-डगर में

एक आभा पूर्त,

रोशनी सब के लिए थी, एक को भी

थी नहीं अंगार,

फ़र्क़ अपने औ' पराए में न समझा

शांति का यह दूत,

चाँद-सूरज से प्रकाशित एक-से हैं

झोंपड़ी-प्रासाद,

एक-सी सबको विभा देते, जलाते

जो कि अपने प्राण,

हो गया क्या देश के

सबसे यशस्वी दीप का

निर्वाण !

८. ज्योति में उसकी हुए हम एक यात्रा
के लिए तैयार,
कीं उसी के आसरे हमने तिमिर-गिरि
घाटियाँ भी पार,
हम थके माँदे कभी बैठे, कभी
पीछे चले भी लौट,
किंतु वह बढ़ता रहा आगे सदा
साहस बना साकार,

आँधियाँ आईं, घटा छाई, गिरा
भी वज्र बारंबार,

पर लगाता वह सदा था एक—
अभ्युत्थान! अभ्युत्थान!

हो गया क्या देश के
सबसे अचंचल दीप का
निर्वाण!

ज्योति में उसकी हुए हम एक यात्रा
के लिए तैयार,
कीं उसी के आसरे हमने तिमिर-गिरि
घाटियाँ भी पार,
हम थके माँदे कभी बैठे, कभी
पीछे चले भी लौट,
किंतु वह बढ़ता रहा आगे सदा
साहस बना साकार,

आँधियाँ आईं, घटा छाई, गिरा
भी वज्र बारंबार,

पर लगाता वह सदा था एक—
अभ्युत्थान ! अभ्युत्थान !

हो गया क्या देश के
सबसे अचंचल दीप का
निर्वाण !

१०. विष घृणा से देश का वातावरण
पहले हुआ सविकार,
खून की नदियाँ बहीं, फिर बस्तियाँ
जलकर गई हो क्षार,
जो दिखाता था अँधेरे में प्रलय के
प्यार की ही राह,
बच न पाया, हाय, वह भी; इस घृणा का
क्रूर, निद्य प्रहार;

सौ समस्याएँ खड़ी हैं, एक का भी
हल नहीं है पास,

क्या गया है रूठ प्यारे देश भारत-
वर्ष से भगवान!

हो गया क्या देश के
सबसे जरूरी दीप का
निर्वाण!

६. लक्ष्य उसका था नहीं कर दे महज
इस देश को आज़ाद,
चाहता वह था कि दुनिया आज की
नाशाद हो फिर शाद,
नाचता उसके दृगों में था नए
मानव-जगत का ख्वाब,
कर गया उसको अचानक कौन औ'
किस वास्ते बर्बाद,

बुझ गया वह दीप जिसकी थी नहीं
जीवन-कहानी पूर्ण,

यह अधूरी कथा रही, इंसानियत का
रुक गया आख्यान।

हो गया क्या देश में
सबसे अपरिचित मौत का
निर्माण !

१०. विष घृणा से देश का वातावरण
पहले हुआ सविकार,
खून की नदियाँ बहीं, फिर बस्तियाँ
जलकर गईं हो क्षार,
जो दिखाता था अँधेरे मे प्रलय के
प्यार की ही राह,
बच न पाया, हाय, वह भी; इस घृणा का
क्रूर, निंद्य प्रहार;

सौ समस्याएँ खड़ी है, एक का भी
हल नहीं है पास,

क्या गया है रूठ प्यारे देश भारत-
वर्ष से भगवान!

हो गया क्या देश के
सबसे जरूरी दीप का
निर्वाण!

फूल

तुम कहाँ छिपे हो युगप्रवर्त्तक सूर्यकांत,
युग-पुरुष लुप्त हो गया, तिमिर छाया नितांत,
संपूर्ण देश हो रहा आज दिग्भ्रांत, क्लांत,
बिखराओ अपने प्रखर स्वरों की शीघ्र कांति ?

मत रहो मौन यों, बहन महादेवी, बोलो,
कुछ तो रहस्य इस दुर्घट घटना का खोलो,
ओ नीर-भरी बदली, क्यों उमड़ नहीं आती,
क्या रक्त-सनी रह जाएगी मा की छाती ?

उठ 'दिनकर', भारत का दिनकर हो गया अस्त,
शृंगार देश का क्षार-धूम्र में ग्रस्त-ध्वस्त,
वाणी के उदयाचल से ऐसी छेड़ तान,
तम का मसान हो नई रोशनी का निशान।

तू कहाँ आज भाई शिवमंगल सिंह 'सुमन',
है खड़ा हो गया वक़्त आज बनकर दुश्मन,
वाणी में भरकर ब्रह्मचर्य हो जा तयार,
कर चुका नहीं है अभी शत्रु अंतिम प्रहार।

तुमसे मेरी प्रार्थना, सुमित्रानन्द (न) पं
संतों में सुमधुर कवि, कवियों में सौम्य सं
आ पड़ी देश पर, बंधु, आपदा यह दुरंत-
टूटे सत्यं, शिव, सुंदरता के तंतु-तं
माने क्या हैं जो हुआ देश पर यह अनर्थ,
बोलो वाणी के पुत्रों में सबसे समर्थ,
वदित वीणा पर गाकर अपना ज्ञान-गा
सुस्थिर कर दो भारतमाता के विकल प्राण
ले करामलकवत् भूत, भविष्यत, वर्तमान
ओ कविर्मनीषी, करो विश्व का समाधान

९८

तुम पिए पड़े हो कहाँ, 'शायरे इन्कलाब',
देखो, जो भारत के सिर के ऊपर अजाब,
गांधी की हत्या, जोश, बात कितनी अजीब,
अब करो होश, हिंदोस्तान के तुम नक़ीब।

तुम किस फ़िराक़ में पड़े हुए रघुपति सहाय,
बापू के उठने से है भारत निःसहाय,
शबनमिस्तान के मोती पर मत हो निसार,
हिंदोस्तान के आंसू भी करते पुकार।

हज़रते 'मोहानी' भारत के सबसे महान
नेता का फ़िरक़ेबंदी ने ले लिया प्राण;
तुम अब भी इसके घेरे से बाहर आओ,
अपने यौवन का शांतिपूर्ण स्वर दुहराओ।

'ओ 'जिगर,' देश का जिगर गोलियों का शिकार,
छाया है तुमपर अब भी जामों का खुमार,
ख्वाबो खुशियों में मुल्क-मुसीबत मत भूलो,
गिरती क़ौमों के शायर ही दारोमदार।

'सागर,' अब संत तुम्हारा गांधी चला गया,
वह नफ़रत के कालिया नाग से छला गया
इस दो मुंह-जिह्वा के ज़हरीले कीरे को
कीलो कोई जादू का गाकर गीत नया।

सर्दार जाफ़री, जाति आज सर्दार होन,
भारत माता का चेहरा मातम से मलीन,
इंसानों में से इंसानियत मिटाने को
तैयार आज हिंदू-मुस्लिम के धर्म-दीन।
तेरी ज़बान में ताक़त है, दिल है दिलेर,
है जानदार तेरी कविता का शेर-शेर,
उठ अपना रोशन क़लम उठा, मत लगा देर,
मुल्की सियाहपन को करना है हमें ज़ेर।
है हमें बनाना नया एक हिंदोस्तान,
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई जिसमें समान।

"सदा यह आती है फल, फूल और पत्थर से,
ज़मीं पे ताज गिरा क़ौमे हिंद के सर से।

तुझी को मुल्क में रोशन दिमाग़ समझे थे,
तुझे ग़रीब के घर का चिराग़ समझे थे।

जो आज नरवीनुमा का नया ज़माना है,
यह इन्क़लाब तेरी उम्र का फ़साना है।

वतन की जान पे क्या-क्या तबाहियाँ आईं,
उमँड-उमँड के जहालत की बदलियाँ आईं,
चिराग़े अम्न बुझाने को आँधियाँ आईं,
दिलों में आग लगाने को बिजलियाँ आईं।
इस इंतशार में जिस नूर का सहारा था,
उफ़क़ पे क़ौम की वह एक ही सितारा था।

हदीसे-क़ौम बनी थी तेरी ज़बाँ के लिए,
ज़बाँ मिली थी मुहब्बत की दासताँ के लिए,
खुदा ने तुझको पयंबर किया यहाँ के लिए,
कि तेरे हाथ में नाक़ूस था अज़ाँ के लिए।

ख़ुदा के हुक्म से जब आबो-गिल बना तेरा,
किसी शहीद की मिट्टी से दिल बना तेरा,
जनाज़ा हिंद का दर से तेरे निकलता है,
सुहाग क़ौम का तेरी चिता में जलता है।

अजल के दाम में आना है यों तो आलम को,
मगर यह दिल नहीं तैयार तेरे मातम को,
पहाड़ कहते हैं दुनिया में ऐसे ही ग़म को,
मिटा के तुझको अजल ने मिटा दिया हमको।

तेरे अलम में हम इस तरह जान खोते हैं,
कि जैसे बाप से छुटकर यतीम रोते हैं।

ग़रीब हिंद ने तनहा नहीं यह दाग़ सहा,
वतन से दूर भी तूफ़ान रंजोग़म का उठा,

रहेगा रंज ज़माने में यादगार तेरा,
वह कौन दिल है कि जिसमें नहीं मज़ार तेरा,

जो कल रक़ीब था वह आज सोगवार तेरा,
ख़ुदा के सामने है मुल्क शर्मसार तेरा।"

खादी के

ग़मभरी नज़्म यह बारबार मैं पढ़ता हूँ,
जब-जब पढ़ता हूँ, अपने मन में कहता हूँ—
गोखले-निधन पर लिखे गए यह बंद अमर
लागू होते हैं बापू पर अक्षर-अक्षर।

बापू ने उनको अपना गुरू बनाया था,
जो गुण-गौरव उनके जीवन में पाया था,
बापू ने तप से उसकी सीमा चरम छुई,
जो कही गुरू पर गई, शिष्य पर बैठ गई।

द्रष्टा तुम थे, 'चकबस्त', नहीं केवल शायर,
दे गए उसे तुम तीस बरस पहले ही स्वर,
जो महा आपदा हिंद देश पर आनी थी,
सच कह दो, तुमको क्या यह घटना जानी थी?

भारत-परस्त मौजूद आज यदि तुम होते,
होशोहवास ऐसे न हिंद के गुम होते,
हस्तियाँ कहाँ अब ऐसी जो सुन पाती हैं,
मरने पर जो आवाज़ चिता से आती है,

तुम आज अगर होते—होना भी था मुमकिन,
तुम यौवन में ही महाप्राण से हुए उऋण,
यह गरमा जाता देश बड़ा धीरज पाता,
यह आज तुम्हारे मरने पर भी पछताता!

२०

ओ सरोजिनी वह तेरी ओजभरी वाणी,
हिंदोस्तान की आवाजों की पटरानी,
हो गया निछावर एक जमाना था जिसके
तेवर, मिठास, अंदाज, साज पर लासानी,
जिसने भारत की सोने की ड्योढ़ी पर से
आशा-उमंग का नया तराना गाया था,
जिसने सदियों से सोए युवक-युवतियों को
किरणों के आँगन में हँसना सिखलाया था,
जिसमें था भारत ने पिछला जौहर खोला,
जिसमें था आनेवाला दिन-सपना बोला,
जिसमें मदिरा का मतवालापन तो था ही,
तूने जिसमें था दिल का अमृत भी घोला।

ओ सरोजिनी, वह तेरी बीन भरी वाणी
खो गई कहाँ है आज, बता तो, कल्याणी
सब खग अभ्यासक तेरे गुनगान का मानी
रोता पत्ता-पत्ता, रोती डाली-डाली
मलयानिल भी अब सायँ-सायँ-सा करता है
जैसे इस ग़म में वह भी आहें भरता है
तू ही क्यों चुप है, बतला तो, कोकिलवयने
माना हमने, तेरे तो टूट गए डैने
लेकिन कवि तो दुख में भी गाता जाता है
क्या याद नहीं है शेली जो बतलाता है—
जिन गीतों में शायर अपना ग़म रोते हैं,
वे उनके सबसे मीठे नग़मे होते हैं,

इससे बढ़कर क्या ग़म भारत पर आएगा,
तू मौन रहेगी तो फिर कौन बताएगा,
बर्दाश्त किया क्या मा भारत की छाती ने,
सिर झुका दिया कितना उसका आघाती ने,
किस पछतावे की ज्वाला उसे जलाती है,
कैसे वह अपने मन को धीर बँधाती है,
ओ सरोजिनी, यदि आज नहीं तू गाएगी,
भारत के दिल की दिल में ही रह जाएगी।

बुलबुले वक़्त, है हमको अब भी इंतज़ार,
जो हुआ देश के मधुबन पर वज्रप्रहार
उससे तेरे दिल में जागेगी एक आग,
संसार सुनेगा पीड़ा का अनमोल राग,
तेरे सफ़ेद बालों पर जाती हैं आँखें
लेकिन ये उनसे ज़रा नहीं घबराती हैं,
है कहा किसी ने, जब शायर बूढ़ा होता,
उसकी कविता तब नौजवान हो जाती है।

२१

यदि होते बीच हमारे श्री गुरुदेव आज,
देखते, हाय, जो गिरी देश पर महा गाज,
होता विदीर्ण उनका अंतस्तल तो जरु
यह महा वेदना
किंतु प्राप्त
करती वाणं

हो नहीं रहा है व्यक्त आज मन का उबाल,
शब्दों के मुख से जीभ किसी ने ली निकाल,
किस मूल केंद्र को वेधा तूने, समय क्रू
घावों को धोने
को अलभ्य
दृग का पानं

होते कवींद्र इन काली घड़ियों के त्राता,
होते रवींद्र तो मातम का तम कट जाता,
सत्यं, शिव, सुंदर फिर से थापित हो पाता,
मरहम-सा बनकर देश-काल को सहलाता,
जो कहते वे
गायक-नायक
ज्ञानी-ध्यान
त्यागी ।

२२

'इक़बाल' क़ब्र के अंदर सोते मौन आज,
मर्सिया क़ौम का गा सकता है कौन आज,
फ़िरक़ेबंदी के प्रोत्साहक वे थे अवश्य,
परिणाम देखकर
शायद आज
बदल जाते।

हिंदोस्तान पर उनका एक तराना था,
है देश-प्रेम क्या? हमने उससे जाना था,
बुलबुलें गुलिस्ताँ मे जैसे गातीं, उसको
हम गाते-गाते
हो जाते थे
मदमाते।

आवाज़ देश के कोने-कोने में जाती,
प्रतिध्वनित उसे करती हर जिह्वा, हर छाती,
सदमा पहुँचे हृदयों को ढाढ़स बँधवाती,
वह संगदिलों को भी अंदर से पिघलाती,
बापू के मरने पर जो हमें दबाए है,
उस महा व्यथा को
यदि वे वाणी
दे पाते।

२३

भारत पर आकर टूटी है क्या आधि-व्याधि,
अरविंद, आज देखो तजकर अपनी समाधि,
गांधी को हमसे छीन ले गया महा व्याध,
हम खड़े विश्व
के आगे हो
निर्धन-अनाथ।

पाया रवींद्र ने भारत का हृदयस्पंदन,
गांधी ने, उसके हाथों का कर्मठ जीवन,
तुमने, उसका विज्ञान-योग, मानस-चिंतन,
तुम तीनों को
पा किया देश ने
उच्च माथ।

गुरुदेव बहुत पहले ही थे मुंह गए मोड़,
बापू भी अपना नाता हमसे गए तोड़,
वे, हाय, भरोसे किसके हमको गए छोड़;
रक्खो स्वदेश पर
स्वामिन्, अपना
वरद हाथ।

२४

रघुपति, राघव, राजा राम
पतित - पावन सीताराम

युग के सबसे बड़े पुरुष को
सबसे छोटे ने मारा,
सबसे खोटे ने मारा,
दिल्ली ही क्या, भारत ही क्या, सारी दुनिया में कुहराम!
रघुपति, राघव, राजा राम
पतित - पावन सीताराम!

मानवता को जीवित रखना
था जिसका जीवन सारा,
दानवता के प्रतिनिधि द्वारा उसका हो ऐसा अंजाम!
रघुपति, राघव, राजा राम
पतित - पावन सीताराम

भारत की किस्मत का टूटा
सब से तेजोज्वल तारा,
हाय-हाय, हतभागा दिन यह, हाय-हाय हतभागी शाम
रघुपति, राघव, राजा रा
पतित - पावन सीताराम

२५

हो गया गर्व भारत माता का आज चूर,
कल कटा देश, चल बसा देश का आज नूर,
नक्षत्र बुरे कुछ इस धरती के आए हैं,
अब भी इसपर
विपदा के बादल
छाए हैं।

जो मरे-कटे वे कैसे वापस आ सकते,
हल, चलो, मिला तुमको इस आफ़त का सस्ते,
घर-बार-द्वार से लेकिन लाखों उखड़ गए,
जो बसे हुए थे
सदियों से वे
उजड़ गए

तलवार झूलती काश्मीर की किस्मत पर,
हैदराबाद बारूद बिछाने में तत्पर,
नेताओं में आपस के झगड़े ठने हुए,
संयोग बुरे दिन
के हैं सारे
बने हुए।

जो सौ रुकावटें रहते पंथ बनाता था,
घन अंधकार में भी मशाल दिखलाता था,
उसको हमने अपने हाथों बलि चढ़ा दिया,
हमने खुद अपने
मिटने का
सामान किया।

इस महा विपद में व्याकुल हो मत शीश धुनो,
अरविंद गंग के, धर अंतर में धीर सुनो,
यह महा पतन विश्वास और आशावादी—
दृढ़ खड़े रहो
चाहे जितना हो
अंधकार।

है रही दिवाली तुम्हें मार्ग जो वर्षों से,
जो तुम्हें बचा लाई है सौ संघर्षों से,
वह ज्योति, भले ही नेता आज धराशायी,
है ऊर्ध्वमुखी
वह नहीं सकेगी
कभी हार।

मिथ्यांध मोह-मत्सर को जीतेगा विवेक,
यह खंडित भारतवर्ष बनेगा पुनः एक,
इस महा भूमि का निश्चय है भाग्याभिषेक,
मा पुनः करेगी
सब पुत्रों का
समाहार!

२७

कल्मष-कलुष-धँसी धरती पर
एक विभा का शासन ध्वस्त,
महा निराशा अंधकार में,
हाय, हुआ सब अग-जग लय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय!

हाड़ - मांस - मज्जा - लोहू में
बापू थे क्या निहित समस्त,
नहीं बने थे क्या वे उन
तत्वों से जो सम्भव - प्रलय,
असतो मा सद्गमय!

हुई चिता के सन्नासन पर
बापू की मृत काया भस्म,
केवल उनकी छाया भस्म,
नई ज्योति से, नव क्षितिज पर
आत्मा का नक्षत्र उदय!
मृत्योर्मा अमृतंगमय!

२९

जब वर्षों हमने खून-पसीना एक किया,
तब भारत के जीवन में ऐसा दिन आया,
हम आजादी के मंदिर का निर्माण करें,
थापें उसमें
आजादी की
प्रतिमा सुंदर।

मंदिर का भव्य, विशाल, मनोहारी नक्शा,
था नाच रहा सपने-सा सब की आँखों में,
साकार उसे करने को सत्य धरातल पर
संपूर्ण जाति
बस होने को ही
थी तत्पर।

लेकिन कैसे देवता हमारे रूठ गए
अब हम इन थोथे नक्शों को लेकर चाटें,
जो मूर्ति प्रतिष्ठित होने को थी मंदिर में,
वह पड़ी हुई है
लो, टुकड़े-टुकड़े
होकर!

३०

यह गांधी मरकर पड़ा नहीं है धरती पर,
यह उसकी काया—काया होती है नश्वर,
गांधी संज्ञा वह जो है जग में अजर-अमर,
दी उसने केवल
जीवन की
चादर उतार।

सुर, नर, मुनि इसको अपने तन पर लेते हैं,
दुनिया ही ऐसी है—मैली कर देते हैं,
कुछ ओढ़ जतन से ज्यों की त्यों धर देते हैं,
दी उसे तपोधन
गांधी ने तप
से सँवार।

मरना जीवन की एक बड़ी लाचारी है,
उसके आगे खिल्क़त ने मानी हारी है,
बापू का मरना जीने की तैयारी है,
बापू का मरना
सौ जीने से
ज़ोरदार।

३२

जो गोली खाकर गिरी, मरी, वह थी छाया,
है अजर-अमर उसके आदर्शों की काया,
भारत ने जिसको युग-युग तपकर उपजाया,
वे हाड़ मांस
के व्यक्ति नहीं
बापू गांधी

जो पकड़ गया है वह तो है केवल छाया,
कितने दिल में षड्यंत्री ने आश्रय पाया,
कितने कुत्सित भावों ने उसको दी काया,
वह एक नहीं है
इस पातक का
अपराधी।

मन के अंदर बिठलाकर नफ़रत के मूज़ी
की प्रतिमा, अपने से पूछो कितनी पूजी ?
जिस भव्य भावना के प्रतीक थे बापू जी,
तुमने कितनी
वह अपने जीवन
में साधी ?

खादी के

३३

जिसने युग-युग से दबे हुओं को दी आशा,
जिसने गूंगों को दी अधिकारों की भाषा,
जिसने दीनों में छिपी दिव्यता दिखलाई,
जिसने भारत की
फूटी किस्मत
दी सँवा

जिसने मुर्दों में प्राणों का संचार किया,
जिसने जनता के हाथों वह हथियार दिया,
जिसके आगे साम्राज्यों ने मुँह की खाई,
जिसने सदियों की
लदी गुलामी
दी उतार

—गोली जो हो जाए छाती के आर-पार,
—गोली जो करे प्रवाहित जीवन-रक्तधार,
—गोली जो कर दे टुकड़े-टुकड़े श्वास-तार,
एहसानमंद
भारत का उसको
पुरस्कार !

जिन आँखों में करुणा का सिंधु छलकता था,
सबको अपनाने का सद्भाव मचलता था,
जिन आँखों में स्वर्गों का नूर झलकता था,
वे मुँदीं; नहीं
तारावलि नभ में
झर

जिस जिह्वा से ऐसा जीवन रस झरता था,
पीड़ा हर, युग-युग के घावों को भरता था,
जिस जिह्वा से अमृत का निर्झर झरता था,
वह रुकी; नहीं
पृथ्वी की छाती
थर

शत-शत माताओं की वत्सलता से निर्मित,
शत-शत माताओं की ममता से आलोड़ित,
बापू की निश्छल छाती छलनी-सी छिद्रित,
क्या तुमने देखी
और न आँखें
पथराईं ?

३५

जिसने रिवाल्वर तेरे आगे ताना था,
बापू, बतला, तूने क्या उसको माना था,
जो तूने उसको युग कर बद्ध प्रणाम किया!
जग की, तेरी
आँखों में कितना
अंतर है!

वह दुनिया भर की नजरों में हत्यारा था,
लेकिन निःसंशय वह भी तुझको प्यारा था,
उसको भी तूने अपना अंतिम स्नेह दिया,
देखा, प्रभु की
छाया उसके भी
अंदर है।

तू बोल अगर सकता तो निश्चय यह कहता—
गाई जिसको जितने दिन रखना है, रहता,
उसने जब चाहा मुझको जग से उठा लिया
यह तो केवल
हरि की इच्छा
का अनुचर है।

३६

अंतिम क्षण में जो भाव हृदय में स्थित होता,
उससे ही आत्मा का भविष्य निश्चित होता,
प्रार्थना सभा में जाते तुमने प्राण दिए,
पाई होगी
तुमने प्रभु चरणों
की छाया।

जन्मते और मरते अति दुःसह दुख होता,
तन जर्जर पल-पल क्या-क्या कष्ट नहीं ढोता,
तुमने क्षण में तन-जीर्ण-वसन को दूर किया,
की मुक्ति वरण
ठुकराकर
मिट्टी की काया।

कर कोटि जतन मुनि तन-मन-प्राण तपाते हैं,
पर अंत समय में राम नहीं कह पाते हैं,
तुमने अंतिम श्वासों से 'राम' पुकार लिया,
ऋषि-मुनि-दुर्लभ
पद आज सहज
तुमने पाया।

३७

नाथू जिसको पिस्तौल मारने को लाया,
थी गलित-पलित जिनकी जन-सेवा में काया ! —
काया ही केवल वह उनकी छू सकता था,
काया का बल था बापू ने कब दिखलाया,
थी बुद्धि कहाँ
उस जड़ मिट्टी के
लोंदा को।

उस ज़ेरा-बख़्तर से थे वे सज्जित-रक्षित,
जो सत्य-अहिंसा के तत्वों से था निर्मित,
ले चुकी परीक्षा थी जिसकी तप की ज्वाला,
थी एक ढाल उनकी ईश्वर निष्ठा निश्चित,
थी हिम्मत ही
हथियार हमारे
जोधा की।

था राजसूय का यज्ञ हुआ पूरा सकुशल,
गतिमान हुआ था आज़ादी का अश्व चपल,
फ़िरकेबंदी ने उठ उसका पथ रोका था,
वह डटा हुआ था उससे लड़ने को अविचल,
यह कैसा मख-विध्वंसी पागल प्रकट हुआ,
बलि की उसने
भारत के भाग्य-
पुरोधा की।

३८

जब से था हमने होश सँभाला उनका स्वर,
मुखरित करते थे ग्राम, नगर, गिरि, वन-प्रांतर,
सूरज से थे नभमंडल में वे उदय हुए,
हम गांधी की
दुनिया मे जन्मे
बड़े हुए।

चिड़ियाँ उनके गुण की गाथाएँ गाती थीं,
दिग्वधुएँ उनके तप की शक्ति बताती थीं,
उनसे उत्साहित सहज हमारे हृदय हुए,
हम गांधी की
दुनिया में उठकर
खड़े हुए।

वे राह कठिन, पर सच्ची ही दिखलाते थे,
चलकर उसपर खुद चलना भी सिखलाते थे,
खुद जल-जलकर पथ पर आभा बिखराते थे,
वे गांधी के
हम अंधकार में
पड़े हुए।

३९

था जिसे नहीं परदेशी शासन का कुछ डर,
जिसने बतलाया था नाचारे ताक़तवर,
ऐसे बेजोड़ बहादुर नेता को पाकर
हम सबने अपने
को खुशक़िस्मत
समझा था।

हमने उसके तन में भारत का तन देखा,
हमने उसके मन में भारत का मन देखा,
उसके जीवन में भारत का जीवन देखा,
हमने उसका व्रत
भारत का व्रत
समझा था।

उसके हँसने में गंगा-जमुना लहराईं,
हाथों ने भारत की सीमाएँ सहलाईं,
पच्छिमी-पूरबी घाट लगे दृढ़ पग उसके
सीने में झलकी हिंद-सिंधु की गहराई,
उसका मस्तक हमने
हिम पर्वत
समझा था।

वह भारत की संस्कृति-धारों से एक हुआ,
उसका शिवगुण हममें से प्रत्येक हुआ,
मिथ्या जो उसका था सबने मिथ्या माना,
सच जिसे कहा
उसने, सब ने सच
समझा था।

बे गांधी भारत कब अनुमाना जाता है,
बे गांधी भारत कब पहचाना जाता है,
अब अपना परिचित देश हुआ है बेगाना,
बचपन से हमने
उसको भारत
समझा था

४०

हत्यारे गोरों की यौवन में सही मार,
ज़ालिम पठान का भी भोड़ा दंडप्रहार,
लोहू-लुहान होने पर भी जो बचे प्राण,
कुछ काम दे गई
किस्मत भारत
माता की।

जीवन को आश्रम के तप संयम से साधा,
जेलों की दीवारों में अपने को बाँधा,
कर लिया स्वयं को देश-दीनता का प्रमाण,
क्षण भर को भी
तृण से सुख की
कब इच्छा की।

तुम मारे-मारे फिरे लिए काया जर्जर,
तुमने रक्खे कितने ही अनशन व्रत दुर्धर,
दुख-ग्लानि-वेदना रहे तुम्हारे चिर सहचर,
बस एक शहादत
मिलनी तुमको
थी बाकी।

बच गई तुम्हारी ट्रेन उलटने से तिल-तिल,
बम फटा निकट ही, सके न तुम रत्ती भर हिल,
इस इज्जत को थी खोज तुम्हारी अरसे से,
हो गई सफल
जनवरी तीस की
चालाकी।

४१

घर तुमको जनता के हित कारागार हुआ,
तप, त्याग, साधना, दम, संयम, शृंगार हुआ,
उपहास, व्यंग, आक्रोश, रोष उपहार हुआ,
तुमने मानवता के
हित क्या-क्या
सहन किया।

हर मुहिम-मोरचे पर की तुमने अगुआई,
जो बात कही वह पहले करके दिखलाई,
संसार जानता नहीं तुम्हारा-सा जेता
दायित्व देश भर
का कंधों पर
वहन किया।

तुम राजाओं में राजा न्याय-परायण थे,
तुम बीच दरिद्रों के दरिद्र नारायण थे,
जन में हरिजन, तुम नेताओं के थे नेता,
अब तुमने ताज
शहादत का भी
पहन लिया।

४२

जो महिमावानों की महानता दिखलाई,
जब मौत मिली महिमावानो की-सी पाई,
वे मृत्यु महद्, शुचि, सुदर इससे क्या पाते,
हम शोक मना
सकते अपनी
क्षति पर भारी।

उनके हाथों भारत का अभ्युत्थान हुआ
सच और अहिंसा का फिर से सम्मान हुआ,
उनका जीवन शापित जग को वरदान हुआ,
कर सिद्ध गए
वे एक पुरुष थे
अवतारी।

वह मृत्यु जिसे सुकरात सुधी ने पाई थी,
वह मृत्यु जिसे ईसा ने गले लगाई थी,
वह मृत्यु जिसे पाने को देव तरस जाते,
उस अमर मरण के
सहज बने वे
अधिकारी।

४३

यह जग सारा पथ भूला हुआ मुसाफिर है,
चिर चंचल है, चिर विह्वल है, चिर कातर है,
पथदर्शक इसको मिलते रहे बहुतेरे,
पर परिणाम
का ही इसके
संयोग नहीं।

हे स्वर्ग सरिता तुम भी पृथ्वी पर आए,
भूले पथ तुमने एक बार फिर दिखलाए,
जिनसे ऋषियों का भाग्य तुम्हें भी था घेरे,
तुमको भी समझे
इस दुनिया के
लोग नहीं।

तुम अपने तप से ऊपर उठते चले गए,
पर हम पापों से नीचे धंसते चले गए,
तुम हमें छोड़कर स्वर्ग लोक को चले गए,
रह गई धरा थी
देव तुम्हारे
योग्य नहीं

तुमने गुलाम हिंदोस्तान में जन्म लिया,
अपना सारा जीवन इसमें ही बिता दिया,
मिट जाय गुलामी; और इसी तप का यह फल
तुम मरे आज
आज़ाद हिंद की
धरती पर

हिंदू-मुस्लिम थे एक दूसरे के दुश्मन
तुम उनमें मेल कराने का ले बैठे प्रण,
इच्छित फलदायी सिद्ध हुआ पिछला अनशन,
अब दोनों अश्रु
बहाते हैं,
तुमपर मिलकर

बंदी जीवन से मुक्त हुई भारत माता,
हिंदू-मुस्लिम उद्यत कहलाने को भ्राता!
तुम जभी छोड़ते हमको हम होते विह्वल,
पर कहाँ तुम्हारे जग से जाने को आता,
इस से उत्तम,
उपयुक्त और
बेहतर अवसर

हम घृणा-क्रोध-कटुता जितनी फैलाते थे,
वे तप ज्वाला से अपनी नित्य पचाते थे,
कर गई मौत उनको हरि-चरणामृत अर्पण,
वे नित्य जहर का
प्याला चूमा
करते थे।

पद मिला उन्हें जिसके थे वे चिर अधिकारी,
हम समझे थे ग़लती से उनको संसारी,
कर्त्तव्य निरत भू पर उनका था छाया तन,
प्रभु-गोदी में
मन से वे झूमा
करते थे।

वे बहुत दिनों से थे मरने से निडर हुए,
वे तो मरने के पहले ही थे अमर हुए,
क़ातिल, तूने काटी केवल अपनी गर्दन,
वे शीश हथेली
पर ले घूमा
करते थे।

लड़नेवालों में तुम-सा कौन लड़ाका था,
हर एक देश में बँधा तुम्हारा साका था,
औ' शांति करानेवालों के तुम थे राजा,
खुलनेवाली थी
आँख जल्द ही
दुनिया की।

वह शक्ति दिखाई तुमने सिंहासन डोले,
सत्ताधारी सम्राट तुम्हारी जय बोले,
तुमने सगर्व भंगी बस्ती को अपनाया,
लघुतम-महानतम
दोनों ही से
समता की।

था दोस्त दिखाई देता तुमको दुश्मन में,
तुम प्रेम-सुधा बरसाते थे समरांगण में,
पर्वत-सी आत्मा रखते थे तृण-से तन में,
थे शाहंशाह छिपाए अपने मंगल में,
था एक विरोधाभास तुम्हारे जीवन में,
तुमने मरकर
अपना ली राह
अमरता की।

वे अग्नि पताका ले दुनिया में आए थे,
वे स्वर्गों के देवों के, मनभाए थे,
सौ भाँति प्रलोभन उनके पथ में आए थे,
पर ध्यान उन्हें था
सब दिन अपने
व्रत-प्रण का।

वे नहीं चैन से या सुख से रह सकते थे,
वे नहीं विलासों, वैभव में बह सकते थे,
वे नहीं शिथिलता, दुर्बलता सह सकते थे,
जब तक अस्तित्व
कहीं पर भी था
तम घन का।

जीवन में जलने का ही था उनका निश्चय,
वे जला किए, तम हरा किए अविरत निर्भय,
प्रज्वलित दीप बुझने के पहले हो उठता,
होकर शहीद सौ गुने हुए वे तेजोमय,
यह चरमबिंदु था
समुचित उनके
जीवन का।

बापू, कितने ही तेरे एक इशारे पर
फाँसीवाले तख्तों पर झूले हँस-हँसकर,
कितनों ने निर्दय गोली की बौछारों में
निर्भय होकर
अपनी चौड़ी
छाती खोली।

तू खाँस-खाँसकर बिस्तर पर गर मर जाता,
[जाना होता सबको जो दुनिया में आता।]
पहुँचाया जाता स्वर्गलोक के प्यारों में,
लज्जित होता
तू देख शहीदों
को टोली।

तू आज शहीदों का राजा, ओ अभिमानी,
तू सिद्ध शहीदों का अधिकारी सेनानी,
तेरी छाती ने भी गोली खानी जानी,
तूने भी अपने
लोहू से
खेली होली।

५०

जब कानपूर के हिंदू-मुस्लिम दंगे में
वह शिष्य तुम्हारा सत्य-अहिंसा अनुयायी
खाली हाथों था घुसा भेड़ियों के दल में
औ' क़त्ल हुआ था
उनकी ही
रक्षा करते,

तब बापू तुमने अपने पीड़ित अंतर से
उद्गार किए थे व्यक्त इस तरह शब्दों में,
'मुझको गणेश शंकर से ईर्ष्या होती है,
भगवान काश
यह पावन मृत्यु
मुझे मिलती!'

सच्चे दिल से निकली ऐसी सच्ची वाणी
भी नहीं उपेक्षा परमेश्वर कर सकता था,
अब तो ईर्ष्या करने का कोई ठौर नहीं,
आओ गणेश
शंकर से खुल कर
गले मिलो।

तुम अमर शहीदों के चिर पावन नीड़ में
छोड़ पथ पर, हे बापू, अपने चरण धरो,
इस वीर पंथ को छूकर और प्रशस्त करो,
मानव, मानव की दुनिया है इतनी अपूर्ण
होगा बहुतों को
अभी इसी पथ
से जाना।

५०

जब कानपूर के हिंदू-मुस्लिम दंगे में
वह शिष्य तुम्हारा सत्य-अहिंसा अनुयायी
खाली हाथों था घुसा भेड़ियों के दल में
औ' क़त्ल हुआ था
उनकी ही
रक्षा करते

खादी

जब बापू तुमने अपने पीड़ित अंतर से
उद्गार किए थे व्यक्त इस तरह शब्दों में,
'मुझको गणेश शंकर से ईर्ष्या होती है,
भगवान काश
यह पावन मृत्यु
मुझे मिलती !'

सच्चे दिल से निकली ऐसी सच्ची वाणी
की नहीं हमेशा परमेश्वर कर सकता था,
अब तो ईर्ष्या करने का कोई ठौर नहीं,
जाओ गणेश
शंकर से खुल कर
गले मिलो।

तुम अमर शहीदों के चिर पावन गोद में
सोए जब जा, हे बापू, अपने काम करो,
इस वीर देश को सुन्दर और प्रणाम करो,
मानव, मानव की दुनिया है इसको अपने
हीरक बच्चों को
अभी हमीं तक
ले जाना।

वे तप का तेज लिए थे अपने आनन पर,
सूरज से उतरे आकर जग के आँगन पर,
वे जले कि जगती में उजियाला फैल गया,
वे जगे कि सोई
सदियों को भी
जगा गए।

तम कटा विश्व ने एक नई आभा जानी,
जिसमें निष्प्रभ हो गए युगों के अभिमानी,
भर दलित-मर्दितों के अंदर उत्साह नया,
वे उनका सारा
भ्रम, संशय, भय
भगा गए।

हो सके न विचलित अपने पथ से वे क्षण को,
अपना वे कब समझे थे अपने जीवन को,
जीना तो उनका अर्पित ही था जन-गण को,
मरने को भी
वे जन सेवा
में लगा गए।

५२

सुकरात संत ने पिया ज़हर का प्याला था,
मीरा ने उसको चरणामृत कह ढाला था,
ऋषि दयानंद को पड़ा उसीसे पाला था,
हस्तियां इसी
पैमाने की
विष पीती हैं

हज़रत ईसा को चढ़ा दिया था सूली पर,
तन था नश्वर, लेकिन आत्मा थी अविनश्वर,
वह आज किए घर, कितनों के मन के अंदर,
वह वर्तमान,
सदियों पर सदियां
बीती हैं

हम बापू को कब तक रख सकते थे अगोर,
हैं जन्म-निधन जीवन डोरी के ओर-छोर,
कितना महान आदर्श हमें वे गए छोड़,
कौमें ऊंचे
आदर्शों से ही
जीती हैं

५३

जब देव-असुर दोनों ने मिलकर सिन्धु मथा,
तब चौदह रत्नों में अंतिम अमृत निकला,
उस मधु रस के ऊपर कितना संघर्ष हुआ,
देवों ने किस
छल-बल से उसको
छक पाया।

बापू ने एकाकी अंतर-सागर मथकर
तप से, अलभ्य मानवतामृत को प्राप्त किया,
हैं सत्य-अहिंसा रूप और गुण इसके ही,
जो प्राप्त किया
बापू ने सबपर
बरसाया।

अमृत रहता है जहर-लहर के घेरे में
बे लड़े जहर से उसको पाना मुश्किल है,
बापू ने जीवन-सुधा लुटाई औरों में,
विष में केवल
अपने प्राणों को
झुलसाया।

५४

ात्य अहिंसा का सागर था चिर निर्मल,
हीं सतह में, तह में तिनके-भर का बल,
उसने कब जाना था जग का छोटापन, छल,
ये डाल सके थे
उसपर छाया-
छाप नहीं।

जब देव-असुर दोनों ने मिलकर सिंधु मथा,
तब चौदह रत्नों में अंतिम अमृत निकला,
उस मधु रस के ऊपर कितना संघर्ष हुआ,
देवों ने किस
छल-बल से उसको
छक पाया।

बापू ने एकाकी अंतर-सागर मथकर
तप से, अलभ्य मानवतामृत को प्राप्त किया,
हैं सत्य-अहिंसा रूप और गुण इसके ही,
जो प्राप्त किया
बापू ने सबपर
बरसाया।

अमृत रहता है जहर-लहर के घेरे में
बे लड़े ज़हर से उसको पाना मुश्किल है,
बापू ने जीवन-सुधा लुटाई औरों में,
विष में केवल
अपने प्राणों को
झुलसाया।

५४

वह सत्य अहिंसा का सागर था चिर निर्मल,
था नहीं सतह में, तह में तिनके-भर का बल,
उसने कब जाना था जग का छोटापन, छल,
ये डाल सके थे
उसपर छाया-
छाप नहीं।

हमने मिथ्या से सत्य नापना चाहा था,
हमने हिंसा से सिंधु दया का थाहा था,
खुदग़र्ज़ी से फ़ैयाज़ी को अवगाहा था
उसकी गहराई
की हो पाई
माप नहीं।

हमने उसके आदर्शों पर बोली मारी,
हमने उसके वक्षस्थल पर गोली मारी,
अवतार क्षमा का यह जग में कहलाएगा,
आया उठकर
उसके होठों पर
शाप नहीं।

महात्मा बापू की माफ़ करें नरघातक को,
लेकिन जिससे सब जाति हुई उस पातक को,
इतिहास कभी यह पाप नहीं बिसराएगा,
इतिहास करेगा
क्षमा कभी
यह पाप नहीं।

५५

बापू के तन से बेज़बान लोहू बहकर,
उनका शरीर ढकनेवाली चादर रँगकर,
उनके पावों के नीचे की धरती तरकर
क्या सूख गया ?
क्या सूख सदा के
लिए गया ?

उनके लोहू के धब्बे हैं हर दामन पर,
उनके लोहू से लाल करोड़ों के हैं कर,
भारत की चप्पा-चप्पा भूमि उसीसे तर,
किसने समझा, उस जर्जर पंजर के अंदर,
इतना लोहू है,
इतना ज़्यादा
लोहू है

हाथों पर, कपड़ों पर, ज़मीन पर मचल-मचल
वह कहता है, 'तुम हो क़ातिल, तुम हो क़ातिल!'
चुप होना उसका बरसों-सदियों तक मुश्किल,
आनेवाली अनगिनत पीढ़ियों के सिर पर
चढ़कर बापू का खून पुकारेगा बेडर!…
तुमने उसको
पानी से समझा
बेहतर।

भारत के हाथों पाप हुआ ऐसा भारी,
है लगी हुई संपूर्ण जाति को हत्यारी,
इस महा दोष का यदि करना है प्रायश्चित,
मनुताप भाग में
हमें युगों तक
जलना है।

हम भटक-भटककर मरुथल में मर जाएँगे,
निर्मल स्रोतों की राह नहीं हम पाएँगे,
यदि हमें पहुँचना है मनचाही मंज़िल तक
हमको उनके
बतलाए पथ पर
चलना है।

वे नहीं मात्र भारत के भाग्य विधाता थे,
वे सारी भावी दुनिया के भय-त्राता थे,
कर लेना है यदि उनको अपना अंत नहीं
वे साँचे थे,
जिनमें मानव को
ढलना है।

हम सब अपने पापी हाथों को मलते हैं,
हम सब पछतावे की ज्वाला में जलते हैं,
लेकिन अब हम चाहे जितना रोएँ-धोएँ
वह लौट नहीं
सकता, जो स्वर्ग
सिधारा है।

दो बात नहीं करने पाए हम विदा समय,
तुम लोहू से कह गए, हमारा भरा हृदय,
हमने जीकर भारत के भाल कलंक दिया
तुमने मरकर
भारत का भाग्य
सँवारा है।

बापू, तुमसे यह अंतिम विनय हमारी है—
यद्यपि इसका यह देश नहीं अधिकारी है—
करना न इसे वंचित अपने आशीषों से,
यह बुरा-भला
जैसा है, देश
तुम्हारा है।

५८

भाग्य था वे थे हमारे पथ-प्रदर्शक,
और करते ही रहे वे यत्न भरसक,
हम न मोड़ें पाँव वे पहुँचे शिखर तक,
हम क़दम
उनके क़दम पर
धर न पाए।

हम चले वह चाल उनको लाज आई,
और हमने ग़लतियाँ पहचान पाईं,
किंतु पश्चात्ताप के आँसू सँजोकर
शोक हम
उनके हृदय का
हर न पाए।

वे नहीं बस एक भारतवर्ष के थे,
वे विधायक विश्व के उत्कर्ष के थे,
वे हमारे पास थे जग की धरोहर,
किंतु हम
उनकी हिफ़ाज़त
कर न पाए।

५९

पृथ्वी पर जितने देश, जाति औ' मज़हब हैं,
सब मान प्रकट करते जिनका गांधी जी की
हत्या पर परिताप करुण और परिताप किये
जिसने भारत-
इतिहास नवीन
बना दिया।

कोशों में उनके थे जितने भी शब्द अमर
करते सज्जनता, महत्ता, शुचिता, मृदुता,
सबको निसार कर दिया उन्होंने बापू पर,
था स्थान उन्होंने
ऐसा जग में
बना लिया।

हम हत्यारे के जाति-धर्म वालों ने क्या
समझी महानता उस महानतम सत्ता की,
जलती मशाल के नीचे रहा अँधेरा ही
बाहरवालों ने उन्हें सिद्ध साधक समझा,
घर के जोगी
का हमने क्या
सम्मान किया।

६०

बापू के अवसान पर जब मन दुखित-उदास,
धीरज देते हैं हमें बाबा तुलसीदास।
'सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ,
हानि,लाभु,जीवनु, मरनु जसु अपजसु विधि हाथ।

अस विचारि केहि दीजिअ दोषू,
व्यरथ काहि पर कीजिअ रोषू।'
बापू की हत्या का, भाई,
संप्रदायपन उत्तरदायी।
पर न उसे क्या दोष लगाएँ।
नाथू को निष्पाप बताएँ?

नाथू को पापी कहें अथवा हम निष्पाप,
बापू के तन-त्याग पर मन में अति संताप।
संप्रदायपन धर्म हो या अधर्म की मूल,
बापू का हम शोक-दुख कैसे पाएँ भूल!

तात विचार करहु मन माहीं,
सोचु जोग दसरथ नृप नाहीं।'
प्रभु ने कब किस पर छोड़ा,
सत्य-अहिंसा से मुँह मोड़ा?
मानवता के रहे उपासक,
वे ज्ञानी पंडित मानी हार।
'सोचनीय नहिं कोसल राऊ,
भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ।
मरेउ, न मरे, न मर होनिहारा,
भूप भरत जग पिता तुम्हारा।'

भूप भरत को जो दिया गुरु वशिष्ठ ने ज्ञान,
भारत को करता वहीं अब सान्त्वना प्रदान।
सोचनीय बापू नहीं, सोचनीय हम लोग,
सिद्ध न अपने को सके कर हम उनके जोग।

६१

जब तुम सजीव धरती पर चलते फिरते थे,
जब तुम अपनी निर्मल वाणी बिखराते थे,
तब तुमको हम वह इज्जत आदर दे न सके,
जिसके तुम थे
हे बापू, सच्चे
अधिकारी

लेकिन अब जब तुम दुनिया से कर कूच गए
हमको अपनी भारी ग़लती महसूस हुई,
मुख नहीं तुम्हारा गुण वर्णन करते थकता,
आँखें श्रद्धांजलि
देते हुए
नहीं थकतीं

अस्तु विचार करहु मन माहीं,
सोचु जोग दसरथ नृप नाहीं।'
बापू ने कर दिय जस सोहा,
अन्त-घड़ियों के दुख मोहा?
मानवता के रहे उपासक,
वे अपनी अंतिम साँसों तक।
'सोचनीय नहिं कोसल राऊ,
भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ।
भयेउ, न अहै, न अब होनिहारा,
भूप भरत जस पिता तुम्हारा।'

भूप भरत को जो दिया गुरु वशिष्ठ ने ज्ञान,
भारत को करता वही अब सान्त्वना प्रदान।
सोचनीय बापू नहीं, सोचनीय हम लोग,
सिद्ध न अपने को सके कर हम उनके जोग।

६१

जब तुम सजीव धरती पर चलते फिरते थे,
जब तुम अपनी निर्मल वाणी बिखराते थे,
तब तुमको हम वह इज़्ज़त आदर दे न सके,
जिसके तुम थे
हे बापू, सच्चे
अधिकारी

लेकिन अब जब तुम दुनिया से कर कूच गए
हमको अपनी भारी गलती महसूस हुई,
मुख नहीं तुम्हारा गुण वर्णन करते थकता,
आँखें श्रद्धांजलि
देते हुए
नहीं थकतीं

क्यों न हो हमारी उन्हीं कुपूतों में गिनती
जो कष्ट पिता को जीवन में पहुँचाते हैं,
लेकिन जब वह टिकठी के ऊपर चढ़ जाता,
पिंडे उसपर
लुढ़काते हैं।

[illegible] नेया में हँसनेवालों की,
हमने अपने कर्मों से मौक़ा उन्हें दिया,
यह व्यंग वचन मेरे सुनने में आया है,
मौजूद पिता आँखों को नहीं सुहाता है,
मृत पिता आँसुओं
से नहलाया जाता है।

जग में ऐसे भी आँसू की, उच्छ्वासों की
जो क़ीमत है, बापू, तुमने अवरेखी थी,
तुमने इन धुँधले-धुँधले चिह्नों में ही तो
मानव सुधार
की आशाएँ दृढ़
देखी थीं।

खोकर अपने हाथों से दौलत गांधी-सी,
तू आज खड़ी भारतमाता अपराधी-सी,
दृग द्रवित किए, सिर नमित किए, मुंह लटकाए,
छाती धक-धक,
भीगा मस्तक,
रग-रग सशंक।

गांधी तेरे मुख-मंडल का था उजियाला,
गोडसे लगाकर, हाय, गया खांचा काला,
अचरज होगा यदि तृण से पर्वत छिप जाए,
आभामय है
अब भी तेरा
आनन-मयंक।

यदि अवसर यह लज्जा से शीश झुकाने का,
तो गर्वसहित ऊपर भी शीश उठाने का,
अवसाद घना उत्साह नया बनकर छाए,
बलि-गौरव में
छिप जाए हत्या
का कलंक।

६३

वे आत्मजीवी थे काया से कहीं परे,
वे गोली खाकर और जी उठे, नहीं मरे,
जब से तन जलकर मिटा हो गया राख-धूर,
तब से आत्मा
की और महत्ता
जना गए।

उनके जीवन में था ऐसा जादू का रस,
कर लेते थे वे कोटि-कोटि को अपने वस,
उनका प्रभाव हो नहीं सकेगा कभी दूर,
जाते-जाते
बलि-रक्त-सुरा
वे छना गए।

यह झूठ, कि, माता, तेरा आज सुहाग लुटा,
यह झूठ, कि तेरे माथे का सिंदूर छुटा,
अपने माणिक लोहू से तेरी मांग पूर
वे अचल सुहागिन
तुझे, अभागिन,
बना गए।

६४

अज्ञान, अशिक्षित और अदीक्षित भारत में
जिसमें मजहब की अंधी श्रद्धा भर बाक़ी,
आसान बड़ा था उसका झंडा ऊँचा कर
लोगों को भरमाना
या पागल
कर देना।

है धर्म नाम पर बेशर्मी की मार हुई,
है धर्म नाम पर बेशर्मी के वार हुए,
है धर्म नाम पर अत्याचार घोर किए
जिसने, जितनों ने
केवल स्वार्थ
पुजाने को।

है धर्म युद्ध में आना कोई खेल नहीं
उसकी तैयारी आत्म त्याग, तप, साधन है,
इसमें विजयी होने की कीमत मर्दन है,
जो आज युगों के ताज सजाते महलों में,
जो आज बधाई लूट रहे हैं जलसों में,
वे धर्म आड़ में लड़नेवाले थे योद्धा,
हम धर्म-नाम पर
लड़नेवाले
तो तुम थे!

६५

है गांधी हिंदू जनता का दुश्मन भारी,
वह करता है तुर्कों की सदा तरफदारी,
उसका प्रभाव हिंदुत्व के लिए भयकारी,
यह बात घुसी
कुछ घूमे-उल्टे
माथे

हिंदुत्व दिव्यतम बापू जी में व्यक्त हुआ,
संसार उसीके कारण उनका भक्त हुआ,
हिंदू आदर्शों के ही रहकर अनुयायी
वे आज चमकते
विश्व जनों की
पां

जिसने मानवता के हित इतना दुख झेला,
वह कर सकता था हिंदूपन की अवहेला,
हिंदुत्व शब्द है मानवता का पर्यायी,
हिंदुत्व सुरक्षित
था बापू के
हा

६६

उसने खुद तृण-तुस-कंटक जाल चबाया,
लेकिन हमको छाती का क्षीर पिलाया,
दी लगा हमारे ही हित में मृत काया,
गौ के से गुण
थे उस माधव
मोहन में।

था एक अहिंसा, दूजा सत्य किनारा,
बहती थी जिसके बीच प्रेम की धारा,
गांधी ने लाखों नारि-नरों को तारा,
बहती गंगा-सा
था वह जग-
मां[illegible]

उसने तपमय कर्मों में उम्र बिताई,
मुँह मोड़ लिया जब फल की बेला आई,
उस वीतराग से ऋद्धि-सिद्धि शरमाई,
थी मूर्तिमान
गीता उसके
जी[illegible]

गौ-गंगा औ' गीता की याद दिलाता,
वह चला गया इस दुनिया से मुसकाता,
हिंदूपन का जो मर्म उसे बतलाता,
कुछ पाप छिपा
है उसके
हिंदू[illegible]

६७

हू-जनता को रहा सदा वह धर्म-प्राण,
स्लिम जब समझे, निकला सच्चा मुसलमान,
ईसाई को था भू पर ईसा का प्रमाण,
पारसी, जैन, सिख, बौद्धों को था प्रिय समान,
वह संत सभी
की पूजा का
अधिकारी था।

जीवन भर रक्खी उसने अपनी आन एक—
हिंदू-मुस्लिम-ईसाई—सब में प्राण एक,
है छिपा हुआ सब के अंदर इंसान एक,
है बसा हुआ सब के भीतर भगवान एक,
वह मानवता-
मंदिर का एक
पुजारं

थी आंख तैरती दुनिया की ऊपर-ऊपर,
वह भेद विभेदों को पैठा, पहुंचा भीतर,
उसने ऊपर उठ कहा, किया, औ' दिखलाया,
बेमानी क़ौमों, देशों धर्मों के अंतर,
वह सौ विरोध
के बीच

उसके बेटे दोनों थे हिंदू-मुसलमान
वह बना रहा था हिंदू को तप-त्यागप्राण
मुस्लिम के पथ में बिछा रहा था आत्मदान
गिरता न एक
इससे, दूजा
बनत

उसको प्रिय थे दोनों भगवत् गीता, क़ुरान,
दोनों को देता था अपनी श्रद्धा समान,
पाता था दोनों में प्रभु-वाणी का प्रमाण,
दो भिन्न सुरों
से गाता था
वह ए

उस धवल कमल को तुमने समझा तक्षक था
पालक था, जिसको तुमने समझा भक्षक था,
वह दुश्मन नंबर एक तुम्हारा रक्षक था,
धीरे-धीरे
तुमको होगा
यह

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

हिंदू-मुस्लिम शत्रु बनाकर,
हुए धर्म का लेकर नाम,
बापू ने दोनों को सिखला साथ कराया यह शुचि गान—
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

ईश्वर की अल्ला की पूजा
दोनों की दोनों बेकाम,
भूल मगर हम जाएँ इनके कारण रह सकता इंसान।
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

बापू तो अब अंतर्धान,
छोड़ा है जो काम उन्होंने
उसको हम सब दें अंजाम,
बापू के मुख से निकले इस महामंत्र को करें प्रमाण।
ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

७१

ईश्वर-अल्ला एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।
सरि-संगम, बन-गिरि-आश्रम से
ऋषियों ने जो कहा पुकार,
आज उसीको दुहराता है यह भंगी बस्ती का संत,
…एकं सद्विप्रा बहुधा वदंति !
ईश्वर-अल्ला-एकहि नाम,
सबको सन्मति दे भगवान।

७२

एक हज़ार बरस की जिसने
कर दी दूर गुलामी,
उस नेताओं के नेता को
एक हज़ार सलामी,
किया योग्य उसने अयोग्य को
यौगिक शक्ति जगा के।

मानव थे कटते-मरते थे
भूले देश भलाई,
सिखलाया उसने है हिंदू-
मुस्लिम भाई-भाई,
मंत्र मुहब्बत का दोनों के
कानों में बिठला के।

हिंदू करते थे सदियों से
जिनकी क्रूर अवज्ञा,
उन्हीं अछूतों को दी उसने
हरिजन की शुभ संज्ञा,
किए अपावन उसने पावन
दृग-जल से नहला के।

झुका धरा का सारा वैभव
उसके तप के आगे,
दान दिया जिसने अपने को
वह जग से क्या माँगे,
धन्य हुआ वह मानव के हित
तन-मन-प्राण लगा के।

उसने अपने जीवन में वह
विशद साधना साधी,
जगती के भाग्योदय का है
नाम दूसरा गांधी,
शांति विश्व पाएगा केवल
उसका पथ अपना के।

भारतीय जीवन का सबसे
उज्ज्वल रूप दिखा के,
भारतीय संस्कृति का सबसे
व्यापक अर्थ बता के,
साथ हुआ गांधी गायत्री,
गीता, गौ, गंगा के।

७३

नरसी मेहता का गीत रेडियो गाता है,
जो वैष्णव जन के गुण लक्षण बतलाता है,
पद-पद पर चित्र तुम्हारा आगे आता है,
जैसे कवि ने
यह लिखा तुम्हें ही
रस मन में।

तुमने ही पीर पराई अपनी-सी जानी,
परदुख उपकारी रहकर भी निर अभिमानी,
निश्छल रक्खा तन-मन, निश्छल रक्खी वाणी,
पर श्री, पर स्त्री
पैठी न तुम्हारे
लोचन में।

निंदा न किसी की भी की, नित साधू वंदे,
काटे तुमने पग-पग पर तृष्णा के फंदे,
मिथ्या से मुख, विषयों से चित न किए गंदे,
क्षण भर न रहे
तुम क्रोध-कपट के
शासन में।

तुम राम नाम के अनुरागी निकले अनन्य
कब तुम्हें छू सके दुर्गुण, माया, मोह-जन्य,
हो गई तुम्हारी जननी तुमसे धन्य-धन्य,
तुम मूर्तिमान
बन गए गान वह
जीवन में।

गांधी को हत्यारे ने हमसे छीन लिया,
भारत ही क्या, पृथ्वी भर को श्री हीन किया
भारत ही क्या पृथ्वी भर को ग़मगीन किया,
आओ, हम उनको
अब दिल में
थापित कर लें।

आचार्य नबी कितने इस दुनिया में आए,
आदर्श जगत ने कितने उनके अपनाए,
इसके पहले गांधी को भी जग विसराए,
आओ, हम उनके
मूल तत्त्व
संचित कर लें।

रज की विनम्रता से रचकर हम उनका तन,
रचकर उसके अंदर मानवता का मृदु मन,
दें उसको सत्य-अहिंसा का श्वासस्पंदन,
आओ, हम बापू
को फिर से
जीवित कर लें।

७५

हिंसा जो उसको चाल रुचे चल सकती है,
पशु बल से अब वह मानव को छल सकती है,
उसको क़ाबू में रखनेवाला दूर हुआ,
उठ गई अहिंसा
आज धरा के
आंगन से

निर्भय होकर अब चल न सकेगी अच्छाई,
सब काल रहेगी सुंदरता अब शरमाई,
झूठेपन को अब मात करेगी सच्चाई,
ढक अपना मुँह
लफ़्फाज़ी के
अवगुंठन से

संसार-ज़माना कितना ही पछताएगा,
लेकिन अब जल्दी शख्स न ऐसा आएगा
जो पाजी को दे अपने दिल के साथ दुआ,
लेकिन अविरत
लड़ता जाए
पाजीपन से

७६

अपने ईश्वर पर उसको बड़ा भरोसा था,
सपने में भी उसने न किसी को कोसा था,
दुश्मनी करे कोई या उसका दोस्त बने,
दुनिया में उसको
नहीं किसी से
गिला रहा !

पिछले कुछ वर्षों में कितना कीचड़ उछला,
हो गया कलंकित कितनों का मुखड़ा उजला,
पर कभी न उसमें उसके निर्मल अंग सने,
वह तम-कर्दम
पर ज्वलित कमल सा
खिला रह

हम आज़ादी के पास पहुँच ज्योंही पाए,
फ़िरकेबंदी के वह भीषण झोंके आए,
हम नौजवान भी उससे भागे, घबराए,
पर ज़ेर उसे सारी ताकत से करने में
अपनी अंतिम
साँसों तक बूढ़ा
पिला रह

जो काम अधूरा उसने अपना छोड़ा था,
जिसमें हमने ही तो अटकाया रोड़ा था,
(पूरे होकर ही छूटे उसके काम ठने)
हमको उसकी
सुधि बार-बार
है दिला रह

७७

जिस दुनिया में भौतिकता पूजी जाती थी,
अपने बल, अपने वैभव पर इतराती थी,
उसमें तुमने केवल खाली हाथों आकर
आत्मिक गौरव-
गरिमा को फिर से
थाप दिया।

जिस दुनिया में पशुता की मची दुहाई थी,
दानवता की ही ओर सयत्न चढ़ाई थी,
उसको तुमने अपने चरित्र की ताक़त पर
स्वर्गिक शृंगों पर
चढ़ने का
संकेत किया।

जो दुनिया थी शंका-संदेहों से धुंधली,
उसमें तुम लाए श्रद्धा की आभा उजली,
इस नास्तिकता के, अविश्वास के युग में भी
जो नहीं तुम्हारी पलकों से पल मात्र टली,
इसका कि मनुज में ही होता विकसित ईश्वर
पक्का सबूत
अपने को तुमने
बना लिया

तुम चले गए, क्या भौतिकता फिर छाएगी ?
क्या पशुता फिर अपना साम्राज्य बढ़ाएगी ?
मानवता फिर दानवता में खो जाएगी ?
क्या ज्योति नहीं अब और जगत में आएगी ?
इन प्रश्नों से
मंथित है मेरा
आज हिया

थी राजनीति क्या, छल-बल सिद्ध अखाड़ा था,
गांधी जी ने उसमें घुसकर हुंकारा था—
मैं सत्य-अहिंसा से मुंह कभी न मोड़ूंगा,
मैं मार्ग और
मंज़िल को एक .
बनाऊंगा।

ऊँची से ऊँची मंज़िल पर आँखें दृढ़ कर
मैं जाऊँगा उस तक चलकर ऊँचे पथ पर,
नीचे पथ से ऊँची मंज़िल गिर जाती है,
मैं पाप न ऐसा
सिर लूंगा,
मिट जाऊँगा।

भारत-आज़ादी प्यारी प्राणों से बढ़कर,
उसपर मेरा रोयाँ-रोयाँ है न्योछावर,
लेकिन तुम लाओ उसको गंदे हाथों से,
मैं उसको
अपने पैरों से
ठुकराऊँगा।

७९

वे कहते थे, दुश्मन को बस वह जीत सका,
जो प्रेम-मुहब्बत से कर उसको मीत सका,
औ' प्रेम-मुहब्बत की है खास कसौटी क्या ?
उसको छूकर
सब क्रोध-घृणा-
कटुता

वे कंटक पथ में फूल बिछाते चले गए,
अपने दुश्मन की भूल बताते चले गए,
सब को अपने अनुकूल बनाते चले गए,
आदर्श अहिंसा
और सत्य के
वे-

मूजी को भी वे दोस्त बनाकर ही माने,
क्या हुआ किसी पागल ने मारा अनजाने,
मुस्लिम, अंग्रेज विरोधी थे सबसे ज्यादा,
वे आज प्रशंसा
में उनकी
सबसे

बापू के मरने पर यह शब्द जिना के थे,
गांधी निःसंशय उन महान पुरुषों में थे,
जिनको था हिंदू संप्रदाय ने जन्म दिया
औ' रहे सदा
हिंदू ही उनके
अनुयायी।

ओ जिना, सदा तुम कड़वी बात रहे कहते,
हम तो अब इनके आदी हैं सहते-सहते,
दुख और लाज से आज हमारा दबा हिया,
दुनिया परखेगी
इन जुमलों की
सच्चाई।

सब सभ्य जगत ने उनके गुण को पहचाना,
युग महापुरुष पदवी से उनको सन्माना,
भावी मानवता का उनको प्रतिनिधि जाना,
तुम लाँघ न पाए
फ़िरक़ेबंदी की
खाई।

८१

यह सच है, नाथू ने बापू जी को मारा,
क्या इतने ही से जीत गया है हत्यारा,
क्या गांधी जी थे छिति, जल, पावक, गगन, प
वे अगर यही थे
तो भी हत्यारा
है

छिति में है उनकी क्षमाशीलता, धृति बाकी,
जल है उनके मन की कोमलता का साखी,
पावक उनकी पावनता का करता वर्णन,
जिसमें तपकर
निखरा उनका
जीवन क

है व्यक्त गगन से उनके क़द की ऊँचाई,
है व्यक्त गगन से उनके दिल की चौड़ाई,
है उनका ही मंदिर-मंदिर, आँगन-आँगन
संदेश प्रचारित
मुक्त समीरण
के द्व

८२

उसने अपना सिद्धांत न बदला मात्र लेश,
पलटा शासन, कट गई क़ौम, बँट गया देश,
वह एक शिला थी निष्ठा की ऐसी अविकल,
सातों सागर
का बल जिसको
दहला न सका

छा गया क्षितिज तक अंधक अंधड़-अंधकार,
नक्षत्र, चाँद, सूरज ने भी ली मान हार,
वह दीपशिखा थी एक ऊर्ध्व ऐसी अविचल,
उंचास पवन
का वेग जिसे
विठला न सका।

पापों की ऐसी चली धार दुर्दम, दुर्धर,
हो गए मलिन निर्मल से निर्मल नद-निर्झर,
वह शुद्ध छीर का ऐसा था सुस्थिर सीकर,
जिसको काँजी
का सिंधु कभी
बिलगा न सका।

८३

तुम गए, भाग्य ही हमने समझा अस्त हुआ,
वह चिता-धूम के तिमिर तोम में ग्रस्त हुआ,
ऐसे ग़म में पागल मनुष्य हो जाता है,
कुछ सच होता
है, कुछ को सच
बतलाता है

सच तो यह है, तुम थे जमीन पर कभी नहीं,
तुम नभ में थे, थी छाया से अभिषिक्त मही,
छाया विलुप्त हो गई, मगर तुम कहाँ हटे,
तुम भारत के
सौभाग्य क्षितिज पर
अडिग डटे

तुम चमक रहे हो अब भी अंबर के ऊपर,
तुम ध्रुव तारा हो जिसकी आभा अविनश्वर,
तुम अभी जगत को सदियों राह दिखाओगे,
तुम भावी की
नौका को पार
लगाओगे

८२

उमड़ा ऐसा विद्वेष न बरसा मात्र मेघ,
उखड़ा शासन, कट गई कौम, बँट गया देश,
यह एक शिला थी निष्ठा की ऐसी अविकल,
सारी सागर
का बल जिसको
दहला न

छा गया क्षितिज तक अंधक अंधड़-अंधकार,
नक्षत्र, चाँद, सूरज ने भी ली मान हार,
यह दीपशिखा थी एक ऊर्ध्व ऐसी अविचल,
उंचारा पवन
का वेग जिसे
विठला न सक

पापों की ऐसी चली धार दुर्दम, दुर्घर,
हो गए मलिन निर्मल से निर्मल नद-निर्झर,
यह शुद्ध छीर का ऐसा था सुस्थिर सीकर,
जिसको काँजी
का सिंधु कभी
बिलगा न सका।

८३

तुम गए, भाग्य ही हमने समझा ग्रस्त हुआ,
वह चिता-धूम के तिमिर तोम में अस्त हुआ,
ऐसे ग़म में पागल मनुष्य हो जाता है,
कुछ सच होता
है, कुछ को सच
बतलाता है।

सच तो यह है, तुम थे जमीन पर कभी नहीं,
तुम नभ में थे, थी छाया से अभिषिक्त मही,
छाया विलुप्त हो गई, मगर तुम कहाँ हटे,
तुम भारत के
सौभाग्य क्षितिज पर
अडिग डटे।

तुम चमक रहे हो अब भी अंबर के ऊपर,
तुम ध्रुव तारा हो जिसकी आभा अविनश्वर,
तुम अभी जगत को सदियों राह दिखाओगे,
तुम भावी की
नौका को पार
लगाओगे।

८४

बापू-बापू कहना तुमको है बहुत सरल,
कहने में क्या लगता है जिह्वा का, चंचल,
अपने को बेटा साबित करना है मुश्किल,
बेटे भी कितने
बापों को दे
दगा गए।

तुमने, हमको जाना उन्मादी-उत्पाती,
फिर भी हमको ही सौंप गए अपनी थाती,
देखो हम उनको उज्ज्वल कितना रखते हैं,
आदर्श हमारे
मन में जो तुम
जगा गए।

दे गए वसीयतनामा अपना तुम हमको—
कुछ और नहीं, यह एक चुनौती है तम को—
हम नहीं बदल सकते हैं उसका अक्षर भर,
तुम इसपर अपनी
मुहर लहू की
लगा गए।

८५

ापू था ऐसा वातावरण विषाक्त बना,
जो तुम अमृतमय बातें हमें बताते थे,
वे अप्रिय थी हो गईं हमारे कानों को,
लगता था तुम
वे ठीक राह
बतलाते हो।

न अपने पथ के थे इतने दृढ़ विश्वासी
न एक तरफ ही हाथ दिखाते सदा रहे,
दुनिया की दुनिया चली दूसरी ओर मगर
तुम एक सत्य
की सतत लगाते
सदा रहे।

८६

बापू तुमसे जो सत्य प्रवाहित होते थे,
उनके हम लोगों के अंतर तक आने में,
ऐसा लगता है, कारण प्रकट नहीं होना,
जैसे यह देह
तुम्हारी देनी
बाधा थी।

जिस दिन से वह जड़ होकर, जलकर क्षार हुई,
उन बातों की सच्चाई ही है नहीं खुली,
दिल की तह से आवाजें उठकर कहती हैं,
हमको मुद्दत से
उनपर बड़ा
अक़ीदा था।

मेरे मन में उठता सवाल है रह-रहकर
पाता जवाब हूँ इसका ढूँढ़े कहीं नहीं,
मुझको अपने को ठीक समझने की क़ीमत,
क्यों तुमको देनी
पड़ी जिगर के
लोहू से?

८७

जब गांधी जी थे चले स्वर्ग से पृथ्वी को
मानव की पशुता से, दानवता से लड़ने,
तब देवों ने था उनको यह आदेश किया,
लो देह भीम की,
बल-विक्रम
बजरंगी का।

ो भुजा विष्णु की चार, एक में गदा धरो,
रवाल एक में औ ्वर त्रिशूल,
औ' चक्र सु ाय की उँगली पर,
-दानवता
से लड़ना है
महा कठिन।

धी जी अपने प्रभु के आगे हो नत शिर
बोले थे मुझको दो तन दुर्बल मानव का
लेकिन मुझमें सुर दुर्लभ आत्मा का बल दो,
आक्रमण मुझे करना है उस अंतर-गढ़ पर,
जो मूल प्रेरणा है पशुता-दानवता की;
कह 'एवमस्तु' उनको था प्रभु ने विदा किया।

८८

भूले से भी तुमने यह दावा नहीं किया
लेकिन अपने कामों से सबको दिखा दिया—
उल्टा अपने को कण-तिनके सा लघु समझा—
बापू, तुम थे
सच्चे अर्थों में
पैगंबर।

था 'सत्य, अहिंसा' शब्द जगत ने जान लिया
पर उनके अर्थों का था कितना मान किया
तुमने ही की उनकी विदग्ध, व्यापक व्याख्या,
की सिद्ध सफलता
उनकी, उनपर
चल, जलकर।

हम देख नहीं पाते हैं दुनिया के आगे,
हम मृग-तृष्णा की ओर चले जाते भागे,
सब ऊँचे आदर्शों-उद्देश्यों को त्यागे,
तुम एक शहादत
थे बहिश्त की
धरती पर।

९०

जब स्वर्ग लोक में पहुँचे बापू तन तजकर
भगवान बुद्ध, ईसादिक पावन पैगंबर--
सब आए उनके पास पूछने को सत्वर,
आदर्शों का जो दीप जलाया था हमने
क्या तुमने उसको
उसी तरह
जलता पाया ?

बापू बोले, आदर्शों की यह दीप-शिखा
जो आप सबों के तप से जागी थी भू पर,
से चुके परीक्षा हैं उसकी उंचास पवन,
यह क्षीणकाय
होकर भी है
तम के ऊपर।

लेकिन उसकी संजीवन शक्ति बढ़ाने को
मानवता देता है उसको अपना स्नेह नहीं,
यह नहीं समझता स्नेह निकलता अंतर से
बरसा सकते
उसको अंबर से
मेघ नहीं।

जीवन भर अपना हृदय गला उस में भरता
मैं रहा दीप यह अधिकाधिक जाग्रत करता,
जब लगा वहाँ से चलने अपना स्नेह-रक्त
आदर्शों के
उस दीवे में
भरता आया।

९१

ा उचित कि गांधी जी की निर्मम हत्या पर
ारे छिप जाते, काला हो जाता ग्रंबर,
केवल कलंक ग्रवशिष्ट चंद्रमा रह जाता,
कुछ ग्रौर नज़ारा
था जब ऊपर
गई नज़र।

अंबर में एक प्रतीक्षा का कौतूहल था,
तारों का आनन पहले से भी उज्ज्वल था,
वे पंथ किसी का जैसे ज्योतित करते हों,
नभ रात किसी के
स्वागत में
चिर चंचल था।

उस महाशोक में भी मन में अभिमान हुआ,
धरती के ऊपर कुछ ऐसा बलिदान हुआ,
प्रतिफलित हुआ धरणी के तप से कुछ ऐसा,
जिसका अमरों
के आँगन में
सम्मान हुआ।

ग्वनी गौरव से अंकित हों नभ के लेखे,
ा लिए देवताओं ने ही यश के ठेके,
अवतार स्वर्ग का ही पृथ्वी ने जाना है,
पृथ्वी का अभ्युत्थान
स्वर्ग भी तो
देखे!

९२

दस लाख जनों के जिसके शव पर फूल चढ़े,
दस लाख लोग जिसकी अर्थी के साथ चले,
दस लाख मुखों से जिसकी जय-जयकार हुई।
वह मरा हुआ
भी लाखों ज़िंदों
का नेता।

जिसके मरने पर सारी दुनिया चीख़ उठी,
जिसके मरने पर सारे जग ने आह भरी,
सारे जहान की आँखों से आँसू निकले,
वह मरकर भी
अगणित हृदयों में
अमर हुआ।

जिसके मरने पर देश-देश ने यह समझा,
जैसे उसने कोई अपना मुखिया खोया,
जिसके मरने पर क़ौम-क़ौम की झुकी ध्वजा
मातम करने को व्यक्त, समादर देने को,
उससे देवों
को ईर्ष्या क्या न
हुई होगी!

९३

ऐसा भी कोई जीवन का मैदान नहीं
जिसने पाया कुछ बापू से वरदान नहीं ?
मानव के हित जो कुछ भी रखता था माने
बापू ने सबको
गिन-गिनकर
अवगाह लिया।

बापू की छाती की हर साँस तपस्या थी,
आती-जाती हल करती एक समस्या थी,
पल बिना दिए, कुछ भेद कहाँ पाया जाने,
बापू ने जीवन
के क्षण-क्षण को
थाह लिया।

किसके मरने पर जग भर को पछताव हुआ ?
किसके मरने पर इतना हृदय मथाव हुआ ?
किसके मरने का इतना अधिक प्रभाव हुआ ?
बनियापन अपना सिद्ध किया सोलह आने,
जीने की क़ीमत कर वसूल पाई-पाई,
मरने का भी
बापू ने मूल्य
उगाह लिया।

९४

तुम उठा लुकाठी खड़े हुए चौराहे पर,
बोले, वह साथ चले जो अपना दाहे घर,
तुमने था अपना पहले भस्मीभूत किया,
फिर ऐसा नेता
देश कभी क्या
पाएगा ?

फिर तुमने अपने हाथों से ही अपना सर
कर अलग देह से रक्खा उसको धरती पर,
फिर उसके ऊपर तुमने अपना पाँव दिया,
यह कठिन साधना देख कँपे धरती-अंबर,
है कोई जो
फिर ऐसी राह
बनाएगा ?

इस कठिन पंथ पर चलना था आसान नहीं,
हम चले तुम्हारे साथ, कभी अभिमान नहीं,
था, बापू, तुमने हमें गोद में उठा लिया,
यह आनेवाला
दिन सबको
बतलाएगा।

९५

गुण तो निःसंशय देश तुम्हारे गाएगा,
तुम-सा सदियों के बाद कहीं फिर पाएगा,
पर जिन आदर्शों को लेकर तुम जिए-मरे,
कितना उनको
कल का भारत
अपनाएगा ?

बाएँ था सागर औ' दाएँ था दावानल,
तुम चले बीच दोनों के, साधक, सम्हल-सम्हल,
तुम खड्गधार-सा पंथ प्यार का छोड़ गए,
लेकिन उसपर
पावों को कौन
बढ़ाएगा ?

जो पहन चुनौती पशुता को दी थी तुमने,
जो पहन दनुजता से कुश्ती ली थी तुमने,
तुम मानवता का महा कवच तो छोड़ गए,
लेकिन उसके
बोझे को कौन
उठाएगा ?

शासन-सम्राट डरे जिसकी टंकारों से,
घबराईं फ़िरक़ेवारी जिसके वारों से,
तुम सत्य-अहिंसा का अजगव तो छोड़ गए,
लेकिन उसपर
प्रत्यंचा कौन
चढ़ाएगा ?

९७

ग्रो देशवासियो, बैठ न जाग्रो पत्थर से,
गो देशवासियो, रोग्रो मत यों निर्झर से,
दरख्वास्त करें, ग्राग्रो, कुछ ग्रपने ईश्वर से,
वह सुनता है
ग़मज़दों ग्रौर
रंजीदों की।

व सार सरकता-सा लगता जग-जीवन से,
भिषिक्त करें, ग्राग्रो, ग्रपने को इस प्रण से—
र कभी न मिटने देंगे भारत के मन से
दुनिया ऊँचे
ग्रादर्शों की,
उम्मीदों की।

धना एक युग-युग ग्रंतर में ठनी रहे—
भूमि बुद्ध-बापू-से सुत की जनी रहे,
र्थना एक, युग-युग पृथ्वी पर बनी रहे,
यह जाति
योगियों, संतों
ग्रौर शहीदों की।

९८

भारत माता की युग-युग उर्वर धरती पर
सब जग वंदित बापू की छाती का शुचितर
जो रक्त गिरा है रक्त-बीज वह बन जाए,
भारत माता
गांधी से बेटे
उपजाए!

यह संत, सिद्ध, सूरमा जन्मती आई है,
समयानुकूल इसने विभूति बिसराई है,
यह परंपरा अपनी प्रसिद्धि क्या बदलेगी,
यह भावी के
नेताओं को भी
उगलेगी।

उर्वरता, देखो, इस पृथ्वी की घटे नहीं,
इस परंपरा का बिरवा सूखे, कटे नहीं,
दुनिया बैठेगी एक दिवस इसके नीचे,
आओ, इसको
सब रक्त-पसीने
से सींचें।

९९

उनके प्रभाव से हृदय-हृदय था अनुरंजित,
फिर भी वे थे काया-बंधन से परिसीमित,
दिल्ली में थे तो था उनसे वर्धा वंचित,
क़ातिल से उनका वध न हुआ, बंधन टूटा,
अब वे विमुक्त
हो आज कहाँ
मौजूद नहीं।

हम खोए थे उनके वस्त्रों-व्यवहारों में,
हम खोए थे उनके मुट्ठी भर हाड़ों में,
उनकी तकली, उनके चर्खे के तारों में,
उनके प्रति अब ऊपर का आकर्षण छूटा,
अब समझेगी
उनके मन का
मंतव्य मही।

जिस जगह मनुज सच्चाई पर अड़ जाएगा,
जिस जगह मनुज आत्मा को नहीं झुकाएगा,
गिर जाएगा पर कभी न हाथ उठाएगा,
अपने हत्यारे की भी कुशल मनाएगा,
हो जाएँगे
गांधी बाबा
बस प्रकट वहीं।

१००

आधुनिक जगत की स्पर्धापूर्ण नुमाइश में,
हैं आज दिखावे पर मानवता की क़िस्में,
है भरा हुआ आँखों मे कौतूहल-विस्मय,
देखें इनमें
कहलाया जाता
कौन मीर ?

दुनिया के तानाशाहों का सर्वोच्च शिखर,
यह फ्रैंको, टोजो, मुसोलिनी पर हर हिटलर,
यह रूज़वेल्ट, यह ट्रूमन, जिनकी चेष्टा पर
हीरोशीमा, नागासाकी पर ढहा कहर,
यह है चियांग, जापान गर्व को मर्दित कर,
जो अर्द्ध चीन के साथ आज करता संगर,
यह भीमकाय चर्चिल है जिसको लगी फ़िकर,
इंगलिस्तानी साम्राज्य रहा है बिगड़-बिखर,
यह अफ़्रीक़ा का स्मट्स खबर है जिसे नहीं,
क्या होता, गोरे-काले चमड़े के अंदर,

यह स्टलिनग्राड

का स्टलिन लौह का

ठोस वीर।

जग के इस महाप्रदर्शन में नम्रता सहित
संपूर्ण सभ्यता भारतीय सारी संस्कृति
के युग-युग की साधना-तपस्या की परिणति,
हममें जो कुछ सर्वोत्तम है उसका प्रतिनिधि—

हम लाए हैं

अपना बूढ़ा,

नंगा फ़क़ीर।

१०१

बापू के बलिदानी शव पर
नेता, लायक,
जन के नायक,
लेखक, गायक

बहा-बहाकर अपने आँसू,
दे श्रद्धांजलि
चले गए हैं,
दुनिया में हैं काम और भी तो करने को।

बापू के बलिदानी शव पर
एक माह पर,
एक मधु पर,
एक मगर स्वर
थमी नहीं है,
सूख न पाया,
चुप न हो सका,
यह किसका स्वर, किसका आँसू, किसकी आहें?

बापू के बलिदानी शव पर
सिसक-सिसककर
बिलख-बिलखकर
कौन गलाती
अपना अंतर ?

यह भारत की
आत्मा शाश्वत,
हा मर्माहत,
रघुपति, राघव, राजा राम इसे दो धीरज।

१०२

हम गांधी की प्रतिमा के इतने पास खड़े
हम देख नहीं पाते सत्ता उनकी महान,
उनकी आभा से आँखें होतीं चकाचौंध,
गुण-वर्णन में
साबित होती
गूंगी जबान।

वे भावी मानवता के हैं आदर्श एक,
असमर्थ समझने में है उनको वर्तमान,
वर्ना सच्चाई और अहिंसा की प्रतिमा,
यह जाती दुनिया
में होकर
क्यों गुमनाम!

बापू के बलिदानी शव पर
एक आह पर,
एक अश्रु पर,
एक अमर स्वर
थमी नहीं है,
घुट न पाया,
चुप न हो सका,
यह किसका स्वर, किसका आँसू; किसकी [illegible]

बापू के बलिदानी शव पर
सिसक-सिसककर
बिलख-बिलखकर
कौन गलाती
अपना अंतर ?

यह भारत की
आत्मा शाश्वत,
हा मर्माहत,
[illegible] :।

१०२

गांधी की प्रतिमा के इतने पास खड़े
देख नहीं पाते सत्ता उनकी महान,
उनकी आभा से आँखें होतीं चकाचौंध,
गुण-वर्णन में
साबित होती
गूंगी जबान।

ी मानवता के हैं आदर्श एक,
ें समझने में है उनको वर्तमान,
वर्ना सच्चाई और अहिंसा की प्रतिमा,
यह जाती दुनिया
से होकर
लोहू लुहान!

१०४

उस परम हंस के घायल होकर गिरते ही
शत-शत कलमों-कंठों से बरबस निकल-निकल
शत-शत प्रबंध, कविताओं ने नभ गूँज दिया,
जैसे सहसा
चीत्कार कर उठी
सरस्वती।